मैथिली

साहित्य

जयनारायण झा 'विनीत'

सुरेश्वर झा

MT
817.230 92 J
559 V

MT
817.230 92
J 559 V

INDIAN INSTITUTE
OF
ADVANCED STUDY
LIBRARY, SHIMLA

अस्तरपर छपल मूर्तिकलाक प्रतिरूपमे राजा शुद्धोदनक दरबारक ओ दृश्य देल गेल अछि जाहिमे तीन गोट भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नकेर व्याख्या कय रहल छथि। हिनका लोकनिक नीचाँमे एक गोट देवानजी बैसल छथि जे ओहि व्याख्याकेँ लिपिबद्ध कय रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई प्रायः सभसँ प्राचीन एवं चित्रलिखित अभिलेख थिक।

नागार्जुनकोण्डा, दोसर शताब्दी
सौजन्य : राष्ट्रीय संग्रहालय, नयी दिल्ली

भारतीय साहित्यक निर्माता

जयनारायण झा 'विनीत'

लेखक
सुरेश्वर झा

साहित्य अकादेमी

Jaynarayan Jha 'Vineet' : A monograph in Maithili by Sureshwar Jha on the Maithili author. Sahitya Akademi, New Delhi (1997), Rs. 25.

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 559 V
00117118
MT
817.23092
J 559 V

© साहित्य अकादेमी
प्रथम संस्करण : १९९७

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय

रवीन्द्र भवन, ३५, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१
विक्रय विभाग : 'स्वाति', मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली ११० ००१

क्षेत्रीय कार्यालय

१७२, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई ४०० ०१४
जीवनतारा भवन, चौथा तल, २३ ए/४४ एक्स, डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता ७०० ०५३
३०४-३०५, अन्ना सालई, तेनामपेट, चेन्नई ६०० ०१८
ए डी ए रंगमन्दिर, १०९, जे. सी. मार्ग, बैंगलौर ५६० ००२

मूल्य : पचीस टाका

Indian Institute of Advanced Study SHIMLA 117118 9.12.04

ISBN 81-260-0236-0

लेज़र-टाइपसेटिंग : अक्षरश्री, दिल्ली ११० ०३२
मुद्रक : कलरप्रिंट, दिल्ली ११० ०३२

विषयानुक्रमणिका

प्राक्कथन	७
परिवेश ओ प्रेरणा	९
जीवन आ' व्यक्तित्व	१५
राष्ट्रसेवा एवं रचनात्मक कार्य	२१
साहित्य-सृजन	३१
किछु बीछल कविता	४३

प्राक्कथन

जयनारायण झा 'विनीत' द्वारा रचित हिन्दीक तीन गोट काव्य-संग्रह 'कुंज' (१९२७ ई.), 'माला' (१९२८ ई.) तथा 'मानव' (१९२८ ई.) प्रकाशित भेल छनि। हिनक मैथिली कविताक प्रथम संग्रह 'पुष्करिणी' १९६९ ई. मे प्रकाशित भेलनि तथा 'सुमन संचय' नामक दोसर मैथिली काव्य-संग्रहक पाण्डुलिपि 'मैथिली अकादमी' पटनामे प्रकाशनक वाट जोहि रहल छनि। ओकर बीस बरखक बाद मैथिली कविताक एक संग्रह प्रकाशित कराओल जायं, तकर विचार-विमर्श हमरा संग 'विनीत' जी कयलनि। 'विनीत'जीक जीवनक अधिक समय स्वतंत्रता-आंदोलन, राजनीति तथा समाज-सेवामे व्यतीत भेलनि। साहित्य-साधनामे अपेक्षाकृत थोड़ समय लगा सकलाह। मुदा हिन्दी ओ मैथिलीक विभिन्न पत्र-पत्रिकामे हिनक कविता बरोबरि प्रकाशित होइत रहलनि। मैथिलीक जे कोनो साप्ताहिक किंवा मासिक पत्रिका जतबा समय धरि छपल, ताहिमे 'विनीत'जीक कविता अवश्य प्रकाशित होइत रहलनि। परञ्च ओकरासभकेँ संकलित कऽ पोथी प्रकाशित करवाक दिस हुनक प्रवृत्ति नहि छलनि। ओहिलेल समय अ। पाधन दुनूक अभाव बाधा बनल रहल।

'विनीत'जी क अभिलाषाक पूर्ति करबाक लेल हम तत्परतापूर्वक हुनक मैथिली कविताकेँ पत्र-पत्रिकाक फाइलसँ लऽ 'विनीत-भारती' नामक मैथिली कविता-संग्रह तैयार कयल। मिथिला विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक उपाचार्य डॉ. भीमनाथ झा एहि कार्यमे हमरा अपेक्षित सहयोग कयलनि तथा ओहि संकलनक संयोजनमे हुनक सहभागिता पूर्णरूपेण रहल। 'विनीत-भारती' विनीतजीक जीवन-कालमे प्रकाशित भऽ गेलनि। पटना चिकित्सा महाविद्यालय एवं अस्पतालक 'कॉटेजवार्ड' मे रोग-शय्या पर पड़ल हुनका हाथमे जखन ई पोथी गेलनि तँ ओ अत्यंत प्रसन्न भेलाह।

'विनीत'जीकेँ हमरा पर अपार विश्वास एवं स्नेह छलनि। हमरासँ हुनका एतेक घनिष्ठता कोना भेलनि से हमरा स्वयं नहि बुझि पड़ैत अछि। अवस्था, कार्य ओ सिद्धांत सभमे हमरा हुनका संग कोनो समानता नहि छल। प्रथम परिचयक समयमे हम पटना कॉलेजक स्नातक कक्षाक छात्र छलहुँ तथा समाजवादी आंदोलनसँ जुड़ल छलहुँ। 'विनीत' जी बिहार विधान-सभाक सम्मानित ओ लोकप्रिय सदस्य छलाह तथा कांग्रेस कर्मी छलाह।

विनीत'जीकेँ निःसन्तान रहबाक कारणे ट्रस्ट बनायब आवश्यक भेलनि।

पाछाँ आबिकऽ जखन ओ अपन साधन ओ सम्पत्तिक दू गोट ट्रस्ट बनौलनि तँ हमरा ओहिमे प्रमुख रूपसँ संलग्न कयलनि ।

'विनीत-भारती' संकलन तैयार करबाक क्रममे हम ई देखलहुँ जे 'विनीत'जीक असंख्य मैथिली एवं हिन्दी कविता विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छिड़ियायल छनि । ओहि समयमे इहो स्पष्ट भेल जे 'विनीत'जी एक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी, लोकप्रिय राजनीतिज्ञ एवं समाज-सेवीक संगहि मैथिली आ' हिन्दीक एक विशिष्ट साहित्यकार छथि । 'विनीत-भारती'क विमोचन करबाक समयमे श्रीयात्री (बाबा नागार्जुन) 'विनीत'जीकेँ मैथिली साहित्यक मैथिलीशरण गुप्त कहि सम्मानित कयने छलथिन ।

एहि सभ पृष्ठभूमिकेँ दृष्टिमे राखि साहित्य अकादेमीक मैथिली सलाहकार समितिमे 'विनीत'जी पर 'भारतीय साहित्यक निर्माता' सिरीजमे एक विनिवन्ध प्रकाशित करबाक निर्णय लेल गेलैक आ' हमरा ओ लिखबाक निमंत्रण भेटल ।

एहि विनिबन्धकेँ लिखबाक लेल 'विनीत' जी पर प्राप्त जे किछु सामग्री उपलब्ध करब संभव भऽ सकल तकर हम उपयोग करवाक पूर्ण प्रयास कयलहुँ अछि । एहि विनिवन्धक लेखन आरंभ करबासँ किछु दिन पूर्व 'विनीत'जी क पत्नीक अप्रत्याशित रूपसँ निधन भऽ गेलनि, आ' तेँ हम हुनकासँ 'विनीत'जीक समबन्धमे किछु अधिक बुझबाक अवसरसँ सेहो वंचित रहि गेलहुँ । तथापि हमरा संतोष अछि जे जयनारायण झा 'विनीत'क व्यक्तित्व एवं कृतिक सम्बन्धमे अधिकसँ अधिक जतेक तथ्य एकत्र होयबाक चाही से करबामे हमरा सफलता भेटल अछि ।

पोथीक अंतमे हम 'विनीत'जी द्वारा रचित मैथिलीक ओहेन तइस गोट बीछल कविता सम्मिलित कऽ देलिऐक अछि जे साहित्यिक रूपेँ श्रेष्ठ होयबाक संगहि अद्यावधि कोनो प्रकाशित पोथीमे संकलित नहि छैक । पोथी लिखबामे ल. ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगाक मैथिली विभागक सेवानिवृत्त आचार्य डॉ. रामदेवझा तथा ओही विभागमे कार्यरत उपाचार्य डॉ. भीमनाथ झाक सत्परामर्श एवं हुनका दुनूगोटेक संग विचार-विमर्श उल्लेखनीय अछि ।

हम साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक पदाधिकारी लोकनिकेँ धन्यवाद देब अपन कर्तव्य बुझैत छी जे हमरा ई विनिबन्ध लिखवाक सुअवसर प्रदान कयलनि ।

एहि पोथीकेँ लिखबामे हमरा जे परिश्रम भेल अछि तकरा हम सार्थक वुझब, यदि एहिसँ मैथिली भाषी साधारण पाठकसँ लऽ भारतक अन्य भाषा-भाषी पाठककेँ एकर विभिन्न भाषामे अनुवादक माध्यमसँ 'विनीत'जीक जीवन तथा हुनक कृतिसँ परिचय प्राप्त करवामे सहयता भेटतनि ।

– सुरेश्वर झा

रंभा-सदन
राजकुमार गंज
दरभंगा ८४६ ००४
२६ सितम्बर १९९६

परिवेश ओ प्रेरणा

'विनीत'जी बीसभ शताब्दीक जाहि कालखण्डमे जन्म लेलनि, हुनकर व्यक्तित्वक विकास भेलनि आ अपन जीवनक लक्ष्य प्राप्त करबाक लेल सक्रिय एवं सजग रहलाह, ओकर ऐतिहासिक परिवेश तथा ओहिसँ उपलब्ध प्रेरणा पर सर्वप्रथम विचार करब आवश्यक अछि। जयनारायण झा 'विनीत' क जन्म एहि शताब्दीक प्रारंभिक कालमे भेल छलनि। भारतमे नव जारण आ राष्ट्रीय भावनाक विकास करबाक लेल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक स्थापना भेना किछुए वर्ष भेल छलैक। बीस बरखक अवस्थेसँ 'विनीत' जी राष्ट्रीय आंदोलनक एक सिपाही बनि गेल छलाह आ महात्मा गांधीक विराट व्यक्तित्वसँ प्रेरणा ग्रहण करब अरंभ कऽ देने छलाह। हिनक जन्म मिथिलाक केन्द्र स्थान दरभंगा जिलाक एक गाममे भेल छलनि।

भारतवर्ष मे राष्ट्रीयताक उत्थानमे अथवा ओकरा एक राष्ट्र बनेबामे मिथिलाक महत्त्वपूर्ण योगदान रहल अछि। यद्यपि आइ आधुनिक भारतक राजनीतिक मानचित्रपर मिथिला एक एकाइक रूपमे विद्यमान नहि अछि, मुदा प्राचीन एवं मध्यकालीन भारतवर्षक राजनीतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक, धार्मिक तथा साहित्यिक सभ पक्षकेँ उजागर करबाक एवं ओकरा सबल बनेबामे जतेक पैघ देन मिथिलाक रहलैक अछि, ओतेक देशक कोनो दोसर भू-खण्डक नहि। कहियो मिथिला भारतकेँ गणतंत्रात्मक व्यवस्था प्रदान कयलक, तँ कखनहुँ तुर्क एवं मुसलमानी आक्रमणसँ ओकरा बचाकऽ हिन्दू धर्म आ संस्कृतिक झंडा फहरौलक। बौद्ध एवं जैन धर्मक प्रचार-प्रसारकेँ, ओकरा नास्तिक मानि, रोकलक, यद्यपि भारतक तत्कालीन शासक लोकनि ओकर प्रचारक लेल पूर्ण सहयोग कयलनि। मिथिलामे युग-युगांतरसँ प्रसिद्ध राजतंत्र ओ गणतंत्रक उत्थान एवं पतन होइत रहल।

मानवीय चिंतनक इतिहासमे मिथिलाक स्थान भारतवर्षमे अद्वितीय अछि। ई क्षेत्र जनक याज्ञवल्क्य, गौतम, कणाद, जैमिनी एवं कपिलक जन्मभूमि रहल अछि। उद्योतकर, मण्डन, वाचस्पति, उदयन, गंगेश पक्षधर एवं अन्य कतोक उद्भट विद्वान् एवं दार्शनिकलोकनि एहि भूमिकेँ अपन विद्वत्तासँ प्रकाशमान राखि ओहि प्रकाशक किरणसँ

समस्त आर्यावर्त्तकेँ जगमगबैत रहलाह । मिथिलाक संस्कृति सम्पूर्ण भारतक संस्कृतिक स्रोत रहल अछि ।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनमे मिथिलाक भूमिका पर विचार करबासँ पूर्व ई आवश्यक अछि जे हम ओकर प्राचीन कालसँ लऽ कऽ अद्यपर्यन्त किछु शब्दमे विचार कऽ ली । जनकक राजतंत्रक समाप्तिक उपरान्त मिथिला वैशाली गणतंत्र एवं बज्जी महासंघक एक अंगीभूत एकाइ बनल तथा वैशाली गणतंत्रक पतनक पश्चात् ओ गुप्त साम्राज्यक एक अंग बनि गेल । ओकर बाद मिथिला प्रबल हिन्दू राजा हर्षवर्धनक राज्यक अंतर्गत आयल । सातम शताब्दीमे (६४७ ई.) श्रीहर्षक मरणोपरान्त मिथिलामे एक अंधकार युगक प्रारम्भ भेल जाहिमे अस्थिरता एवं अराजकता व्याप्त रहल । एगारहम शताब्दीक अंतिम दिनमे (१०९७ ई.) मिथिला एक बेर पुनः अपन राजनीतिक स्वतंत्रताकेँ प्राप्त कऽ लेलक, जखन कर्णाटवंशीय प्रथम राजा नान्यदेव मिथिलामे एक स्वतंत्र राज्यक स्थापना कयलनि । कर्णाटवंशीय राजा लोकनिक समयकेँ मिथिलाक स्वर्णयुग कहल जाइत छैक । एहि समय सँ लऽ कऽ ओइनवारवंशक राजतंत्र धरि मिथिलामे स्थिरता, स्वतंत्रता, प्रगति आ विकासक युग रहल । ओइनबार वंशक राजालोकनिक समयसँ मिथिलापर बाहरी शक्तिक प्रभाव बढ़ि गेलैक आ' अंतमे मिथिला दिल्लीक मुगल शासनक अंतर्गत आबि गेल । किछु वर्षक बाद मुगल शासक अकबर मिथिलाक एक महान् विद्वान् महेश ठाकुरकेँ तिरहुतक (मिथिला) सनद प्रदान कऽ देल । अंगरेजी राज्यक प्रारंभमे ई क्षेत्र बंगाल सूबाक एक अंग बनि कऽ रहल आ बादमे बिहार प्रांतक स्थापना भेलपार ई ओकर एक भाग बनि गेल ।

भारतक राष्ट्रीय आंदोलनमे १८५७ ई. क क्रांति एक महान घटना थिक, जे सम्पूर्ण देशकेँ एक बेर झकझोरि देलक । एहि क्रांतिसँ भारतक प्रायः सभ भाग थोड़-बहुत प्रभावित भेल । मिथलाक क्षेत्र सेहो ओहिसँ अप्रभावित नहि रहि सकल । भारतीय स्वतंत्रता-संग्रामक प्रथम ध्वनि मिथिलोमे सुनल गेल । १८५७क आंदोलनक पूर्वेसँ देशक अन्यान्य क्षेत्र जकाँ मिथिलामे सेहो असंतोषक भावना बढ़ि रहल छल । १८५५-५६मे मुजफ्फरपुरक जहलमे भेल 'लोटा-विद्रोह' एकर पुष्टि करैत अछि । (जर्नल ऑफ द बिहार रिसर्च सोसाइटी, पृ. ५५) ।

ई मानल जाइत अछि जे १८५७ क स्वतंत्रता संग्राममे मिथिलाक ब्राह्मण बहुत सक्रिय छलाह । वीर कुंवरसिंह द्वारा अंगरेजक विरुद्ध विद्रोह करबाक निर्णयक पाछाँ मैथिल ब्राह्मणलोकनिक मंत्रणा छल । कुंवरसिंहक गुरु भिखारीदत्तझा मधुबनीक निकटस्थ मंगरौनी गामक निवासी छलाह । ब्राह्मण-विद्रोहक एक अन्य उदाहरण ईहो अछि जे मधुबनीसँ आठ किलोमीटर दूर स्थित सौराठ गाममे एस. डी. ओ. पर ब्राह्मण लोकनि आक्रमण कयने छलाह । १८५७ ई. क संग्रामक सबसँ अधिक असरि मुजफ्फरपुरमे भेलैक जतऽ सेना

एवं सिपाही खुलि कऽ विद्रोह कयलक। ओहि अवसरपर प्रसिद्ध विद्रोही नाना फड़नबीस अंगरेज शासनक विरुद्ध गुप्तवास करैत मिथिला होइत नेपालक यात्रा कयने छलाह। दरभंगा राजक तत्कालीन महाराज महेश्वरसिंहसँ हुनका भेट भेल छलनि आ सहयोग प्राप्त भेल छलनि। तत्कालीन राजनीतिक जागरणसँ मिथिला उद्वेलित भेल छल।

जेना कहल अछि, राष्ट्रीय स्वतंत्रता-संग्राममे १८८५ ई क कांग्रेसक स्थापना एक प्रधान घटना छल। बादमे गांधीजी द्वारा जन आंदोलन विकसित करबामे मिथिलाक सर्वश्रेष्ठ योगदान भेलैक। दक्षिण अफ्रिकामे लगभग दू दशक धरि ओतऽ अंगरेजी सरकारक विरुद्ध सत्याग्रह अस्त्रकेँ अजमौलाक बाद गांधीजी भारतमे एहि सर्वथा एक नवीन अस्त्रक प्रयोग कोनो ठाम करबाक लेल विचार करिते छलाह कि १९१६ ई. मे मिथिलावासी स्वनामधन्य राजकुमार शुक्ल गांधीजीक ओतऽ जा कऽ चम्पारणमे अंगरेज निलहाकोठीवाल लोकनिक अत्याचारक कथा एहेन प्रभावोन्पादक ढंगसँ कहलथिन जे ओ द्रवित भऽ उठलाह आ स्वयं डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, दरभंगाक वकील ब्रजकिशोर प्रसाद तथा धरणीधर प्रसादक सहयोगसँ चम्पारणक किसानक दुखद गाथाक जाँच कऽ १९१७ मे चम्पारण सत्याग्रह प्रारंभ कऽ देलनि तथा ओहिमे गांधीजी स्वयं जहल सेहो गेलाह। चम्पारण सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता-आंदोलनमे मीलक पाथरे नहि सिद्ध भेल अपितु दुनियामे राजनीतिक आंदोलन करबाक एक सर्वथा नवीन एवं नूतन हथियार प्रदान कयलक। महात्मा गांधीक ई प्रथम प्रयोग बहुत सफल रहलनि आ' चम्पारणक बाद ओकर प्रयोग खेड़ा, अहमदाबाद तथा बारदोलीमे सफलतापूर्वक कयल गेलैक।

डॉ. सच्चिदानन्द सिंहाक विचार आ प्रेरणासँ बाबू ब्रजकिशोर प्रसाद दरभंगा आबि कऽ ओकालति प्रारंभ कयने छलाह। दरभंगामे १८९९ ई. मे युवक संघक स्थापना भऽ चुकल छल, जकरा सक्रिय रखबामे सूर्यदेव नारायण वर्मा, असफाक खान, कमलेश्वरी चरण सिंह, जे. बी. वनर्जी एवं दीनानाथ झा आदि लागल छलाह। ब्रजकिशोर बाबूक दरभंगा अयलासँ ई गुट आओरो अधिक सक्रिय भऽ उठल। सरस्वती अकादमीक स्थापना उत्साही तथा कर्मठ युवकलोकनिकेँ तैयार करबाक लेल कयल गेलैक। ब्रजकिशोर प्रसाद ओकर सभापति छलाह। १९१० ई. मे ब्रजकिशोर बाबू वंगाल काउंसिलक सदस्य चुनल गेलाह। तावत धरि बिहार प्रांत बंगालेमे सम्मिलित छल।

एही समयमे मिथिलाक दोसर क्षेत्र मुजफ्फरपुरमे जे. बी. कृपालानीक नेतृत्वमे ओहि क्षेत्रक युवक समुदाय संघटित भऽ रहल छल। मुजफ्फरपुर आंदोलनकारी लोकनिक गढ़ बनि गेल छल। एहि ठामक प्रमुख नेतालोकनिमे धरणीधर प्रसाद, रामदयालु सिंह, रामनवमी प्रसाद तथा गया प्रसाद प्रभृति देशभक्त छलाह। इएह कारण छल जे चम्पारण जयबाक क्रममे गांधीजी मुजफ्फरपुरमे कृपालानी सहित उक्त अन्य नेता लोकनिसँ सम्पर्क कयने छलाह।

१९२०-२१ ई. क असहयोग आंदोलनमे मिथिलावासी व्यापक रूपसँ भाग लेलनि। एहि क्षेत्रक वकील लोकनि ओकालति छोड़ि देलनि। दरभंगाक प्रमुख ओकील ब्रजकिशोर प्रसाद तथा धरणीधर प्रसाद ओकालति छोड़ि देलनि। छात्र लोकनि स्कूल तथा कॉलेजक बहिष्कार कयलनि। ओहि समयमे मिथिलामे स्कूलक संख्या नगण्य छल, कॉलेज तँ छले नहि। राष्ट्रीय विद्यालयक स्थापनाक क्रममे दरभंगामे नेशनल स्कूलक स्थापना १९३४ ई. मे भेलैक। मधुबनी जिलाक छोटाइ पट्टीक राम बल्लभ सिंह ओकर प्रधानाध्यापक नियुक्त भेलाह। महारानी लक्ष्मीवती स्कूल जे एक ट्रस्ट द्वारा संचालित छल, तकरे 'नेशनल स्कूल' मे परिणत कऽ देल गेलैक। पुरना स्कूलक सरकारी सम्बद्धता आपस भऽ गेलैक। 'नेशनल स्कूल'क विकासमे कमलेश्वरी चरण सिंहाक प्रमुका भूमिका छलनि, जे डॉ. राजेन्द्र प्रसादक अभिन्न मित्र छलयिन। मिथिलाक राजनीतिक इतिहासमे 'नेशनल स्कूल'क अपन विशिष्ट स्थान छैक। एहि क्षेत्रक सब छोट-पैघ राजनीतिज्ञ एहि स्कूलसँ सम्बन्धित रहलाह, अथवा एना कही जे हुनकालोकनिक लेल ई एक प्रशिक्षण-स्थलक रूपमे कार्य करैत रहल।

महात्मा गांधी द्वारा अपनाओल गेल रचनात्मक कार्यक्रम, चर्खाक प्रचार, कताइ आ' बुनाइ आदि कार्य मिथिलामे खूब जोरसँ चलल। एहि कार्यमे मिथिला देशभरिमे अग्रगण्य रहल आ एखनहु अछि। प्रारंभे सँ बिहार चर्खासंघ आ' वादमे बिहार खादी ग्रामोद्योग संघक अंतर्गत मिथिलाक गाम-गाममे कताइ एवं बुनाइ होइत रहल अछि। चर्खाक संग-संग तिरंगा झंडा सेहो मिथिलाक गामे गाम पहुँचि गेल। अंगरेज खादी भंडारकेँ स्वराज्यक लड़ाइक केन्द्र मानैत रहल। चर्खा अंगरेजी सत्ताकेँ हटेबामे एक दिन सफलता प्राप्त कऽ लेलक।

मिथिलाक साहित्य जे पहिने शृंगार एवं भक्ति सम्बन्धी कविता एवं कथामे सीमित छल, से आब राष्ट्रीय गानक दिस उन्मुख भेल। मैथिली गीतांजलि एहि सम्बन्धमे एक अत्यंत चर्चित संग्रह छल। एहिमे देशानुराग एवं देश ओ समाजक कुरीतिक सुधार सम्बन्ध उत्साह-वर्द्धक गीतक संग्रह भेल अछि। मैथिली संदेशमे स्वदेश प्रेम तथा देशोद्धारक लेल भगवानसँ प्रार्थना अछि। डॉ. जयकान्त मिश्रक अनुसार १९०६ ई. सँ १९३५ ई. धरि मैथिली भाषामे विशेष रूपसँ देश-भक्तिक गीत गाओल गेल अछि। भानुनाथ झा, चन्दा झा, जीवन झा, त्रिलोचन झा, गनौर झा, पद्मनाथ झा, केदारनाथ झा, मायाप्रसाद मिश्र, रघुनन्दन दास, कुशेश्वर कुमर, सीताराम झा, काञ्चीनाथ झा 'किरण' काशीकान्त मिश्र 'मधुप', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', श्यामानन्द झा, भुवनेश्वर सिंह 'भुवन', कुमार गंगानन्द सिंह तथा जयनारायण झा 'विनीत' मैथिली साहित्यक विभूति लोकनिक कलम राष्ट्रीय चेतना जागृत करबामे निरन्तर सक्रिय रहल। 'मिथला मोद' निर्भीक पत्रकारिताक माध्यमसँ राष्ट्रीय आंदोलनमे योगदान कऽ रहल छल।

असहयोग आंदोलनक स्थगित भेलाक बाद आ जहलसँ छुटलाक बाद महात्मागांधी

अपन रचनात्मक कार्यक्रमक प्रकरणमे देशव्यापी यात्रा कयलनि । एही क्रममे गांधीजी मिथिलाक सेहो व्यापक भ्रमण कयलनि । ओ जिला एवं अनुमंडलक मुख्यालयमे तँ गेबे कयलाह, बहुत ठाम थानाक मुख्यालयतक पहुँचि गेल रहथि ।

दरभंगामे सत्यनारायण सिंह नोन सत्याग्रहमे प्रमुख रूपसँ भाग लेलनि । राष्ट्रीय आंदोलनमे मिथिलाक जे महान् व्यक्तिसभ असहयोग आंदोलन सँ लऽ कऽ बेयालिस इस्वीक 'भारत छोड़ू' आंदोलन धरि सक्रिय रूपसँ भाग लेलनि एवं विभिन्न प्रकारक यातना सहन कयलनि, ओहिमे धरणीधर प्रसाद, ब्रजकिशोर प्रसाद, कमलेश्वरी चरण सिंह, रामनौमी प्रसाद, चतुरानन दास, रामनन्दन मिश्र, चेतनाथ झा, शिवनन्दन प्रसाद मंडल, श्रीनारायण दास, प्रजापतिमिश्र, आनन्द किशोर दास, जयनारायण झा 'विनीत', जानकी नन्दन सिंह, महादेव लाल दास, राधाकांत चौधरी, नरेन्द्र नाथ दास, सूरज नारायण सिंह, योगेन्द्र शुक्ल तथा प्रो. वलदेवनारायण आदिक नाम उल्लेखनीय अछि । अगस्त क्रांति सम्पूर्ण मिथिलामे रण-चंडीक रूप धारण कऽ लेने छल । गाम-गामे क्रांतिक आगि पसरि गेल छल । स्कूल-कॉलेज बन्द छल । छात्र ओ जनता अपन घर-परिवार छोड़ि सड़क पर आबि गेल छल । रेलक पटरी उखड़ि गेल-छैलक; रेलक आबा जाही बन्द भऽ गेलैक । सड़कक यातायाता सेहो बन्द छलैक । बहुतो ठाम एकसँ दू मास धरि कांग्रेसी कार्यकर्त्ता एवं अन्य आंदोलन कारी जनताराजक स्थापना कऽ लेने छल । एहि सम्बनधमे हाजीपुरक महनार, बिरौलक रसियारी, मधेपुरा सम्पूर्ण, बनगाँव आ त्रिवेणीगंजक नाम उल्लेखनीय अछि ।

मुदा बादमे अंगरेजी सरकारक घोर दमनचक्र समस्त मिथिलामे चलऽ लागल । अनधुन गोलीकांडमे अनेक व्यक्ति शहीद भेलाह । गाम-गाम मे अग्निकांड कराओल गेल । गाम सभमे सामूहिक जुर्माना एवं 'प्युनिटिव' टैक्स लगाओल गेल एवं ओकर वसूली निर्दयतापूर्वक कयल गेलैक । अक्तूबर मास अबैत-अबैत गोरा पलटनक अत्याचार आ दमन चरम सीमा पर पहुँचि गेल छल । मिथिलामे लगभग बीस हजार आंदोलनकारी अपन संगी-साधीक संग जहलमे बन्द भऽ गेलाह ।

अगस्त क्रांतिक आगिमे घी देबाक कार्य कयलक आठ नवम्बरक मध्यरात्रिमे हजारीबाग जहलसँ अपन पाँच साथीक संग जयप्रकाश नारायण द्वारा पलायन । जयप्रकाशकेँ अगस्त क्रांतिक अग्रदूत कहल गेलनि अछि । जयप्रकाशजीक संग अपन जान हाथमे लऽ हजारीबाग जहलसँ पलायन कैनिहार पाँचोगोट क्रांतिकारी मिथिलाक छलाह । ओहिमे छलाह सूरजनाराण सिंह, पं. रामनन्दन मिश्र, योगेन्द्र शुक्ल, गुलाबचन्द आ शालीग्राम सिंह । लोकनायक जप्रकाश नारायणकेँ सेहो हम आधा मिथिलावासी मानैत छियनि, कारण हुनक विवाह दरभंगामे ब्रजकिशोर बाबूक कन्या प्रभावतीसँ छलनि । जयप्रकाशजीकेँ दरभंगासँ बहुत लगाव आ स्नेह छलनि । ओ एहि क्षेत्रमे अधिक काल

अबैत छलाह। दरभंगामे ओ लहेरियासराय स्थित पं. रामनन्दन मिश्रक ओतऽ टिकैत छलाह आ सूरज बाबूक घर पर नरपत नगर सेहो कतोक बेर गेलाह। एक बेर प्रभावतीकेँ मधुबनीमे हमरा समक्ष कहलथिन गे 'अहाँ अपन नैहर आयल छी'। जयप्रकाशजीकेँ जहलसँ पलायन करबामे मिथिलवासी एक अन्य क्रांतिवीर बसावन सिंहसँ सहयोग भेटल रहनि, जे ओहि समयमे पलामूक घोर जंगलमे अपन गुरिल्ला सेनाक संग गुप्त कार्यवाही मे भिड़ल छलाह .

भारतक इतिहासक एहि परिवेश आ राष्ट्रकेँ परदेशी शासनसँ मुक्त करबाक लेल दृढ़ संकल्पित गांधीयुगक अनेक नेताक प्रेरणाक पुञ्जसँ प्रभावित आ' उद्भासित वातावरणमे जयनारायण झा 'विनीत' एहि शताब्दीक प्रारंभिक वर्षसँ आठम दशक धरि जीवन-यापन कयलनि। महात्मा गांधी द्वारा संचालित भारतक प्रथम जनआंदोलन असहयोग-आंदोलनमे ओ वीसहि वर्षक युवावस्थामे सक्रिय भेलाह, जहलक यात्रा कयलनि, बादमे कांग्रेसक कार्यकर्त्ताक रूपमे समस्तीपुरकेँ अपन कार्यक्षेत्र बनौलनि आ जीवनक अंतधरि राष्ट्रीय जागरण, रचनात्मक कार्य ओ संगहि साहित्य-सर्जनामे लागल रहलाह। विनीतजी आरंभमे हिन्दीमे अपन साहित्य रचना करैत छलाह आ ओहि समयमे बिहारक अग्रणी हिन्दीक साहित्यकार रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह 'दिनकर', आरसी प्रसाद सिंह एवं अन्यान्य गोटेक संग हिनक निबन्ध ओ कविता विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत छल। एखनहुँ विनीतजीकेँ राजनीतिक नेतासँ बहुत अधिक साहित्यकार रूपमे लोक जनैत छनि। बादमे ओ मैथिली साहित्य दिस आकर्षित भेलाह आ' प्रधानतया काव्य-विधाकेँ अपनौलनि। मैथिलीक कोनो पत्रिका एहेन नहि प्रकाशित होइत छल, जाहिमे 'विनीत'जीक कविता नहि रहैत छलनि। हुनक जतेक मैथिली कविता विभिन्न मैथिली पत्र-पत्रिकामे छिड़ियाल छनि, तकर यदि संकलन कयल जाय तँ कमसँ कम आधा दर्जन काव्य-संग्रह भऽ सकैत अछि। मुदा संकलन करब आ ओकर प्रकाशनक व्यवस्था दिस 'विनीत' जीक प्रवृत्ति नहि छलनि। दुर्भाग्यवश मैथिलीमे प्रकाशक एवं वितरकक सर्वथा अभाव छैक। लेखक एवं रचनाकारकेँ स्वयं अपना खर्चसँ पोथी प्रकाशित करऽ पड़ैत छनि आ' पाठक एवं किननिहारक अभावमे हुनका पूर्ण आर्थिक बोझ सहन करऽ पड़ैत छनि।

'विनीत'जी क आर्थिक स्थिति एहेन नहि छलनि जे अपन पूजी लगाकऽ मैथिलीक काव्यसंग्रह सभ प्रकाशित करितथि। राजनीतिक कार्य आ सामाजिक-सेवामे अधिक व्यस्तता सेहो हुनका एहि कार्यमे बाधा उपस्थित करैत रहलनि। हुनका निधनक बाद आव हुनका द्वारा बनाओल गेल ट्रस्टक योजना छैक जे हुनक समस्त साहित्यक प्रकाशन एवं वितरण कयल जाय। तकर बाद 'विनीत'जीक साहित्य-साधना एवं सर्जनाक मूल्यांकन ठीकसँ भऽ सकतनि तथा हुनक परिवेश आ' प्रेरणाक विषयमे आओरो कतोक तथ्य उद्घाटित भऽ सकत।

जीवन आ व्यक्तित्व

पं. जयनारायण झा 'विनीत' एक महान् स्वतंत्रता सेनानी, लोकप्रिय विधायक आ स्वच्छ एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्त्ताक संगहि प्रमुख विद्वान् राजनीतिज्ञ, प्रगतिशील चिंतक तथा प्रखर साहित्यकारक रूपमे प्रसिद्ध छलाह । अपन जीवनक आठम दशकक अंतधरि ओ साहित्य-साधनामे अवाध गतिसँ लागल रहलाह । जीवन-यात्राक उत्तरकालमे वार्धक्यक कारणे 'विनती'जी सक्रिय राजनीतिसँ दूर हटैत गेलाह । मुदा हुनक साहित्यिक रचनाक गतिमे शिथिलता नहि अयलनि । हुनक साहित्यमे पदलालित्य, कोमल भाव, गहन चिंतन, प्रगतिशील विचार, एवं प्रसाद गुण अत्यधिक मात्रामे विद्यमान छनि । हिन्दी आ मैथिली दुहू भाषामे हुनक असंख्य निवंध एवं कविता विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि आ' कतिपय कविता-संग्रह सेहो प्रकाशित भेल छनि । कतोक हिन्दी एवं मैथिलीक पाण्डुलिपि स्वतंत्रता-संग्रामक क्रममे नष्ट भऽ गेलनि, जाहिसँ मैथिली आ' हिन्दी साहित्यक अपार क्षति भेलैक । 'विनीत'जी बिहारक राष्ट्रभाषा-विभाग तथा अनेक मैथिलीक प्रमुख साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत भऽ चुकल छथि ।

आजुक सार्वजनिक जीवनमे तँ 'विनीत'जी सन चरित्रवान् कोमल स्वाभाव-सम्पन्न एवं मिठभाषी भेटव दुर्लभ भऽ गेल अछि । देश भरिमे गांधीयुगक समाजसेवी लोकनिक अंतिम बचल-खुचल पीढ़ीमे 'विनीत'जीक एक विशिष्ट स्थान छलनि । स्वतंत्रता संग्राममे सम्मिलित होयबाक लेल हिनका महात्मा गांधी आ डॉ. राजेन्द्र प्रसादसँ प्रेरणा भेटल छलनि । 'विनीत'जी डॉ. राजेन्द्र प्रसादक अत्यंत निकट रहलाह तथा विहार केसरी श्रीकृष्णसिंहक असीम स्नेह प्राप्त छलनि ।

आधुनिक राजनीतिमे 'विनीत'जी अपन कांग्रेस दलसँ ऊपर उठि कऽ विचार करैत छलाह । आजुक मूल्य-विहीन राजनीतिक क्रिया-कलापसँ ओ दुखी भऽ जाइत छलाह । चिंतन ओ विचारमे 'विनीत' जी क्रांतिकारी छलाह तथा सामाजिक कुरीतिमे सुधारक लेल, वार्धक्यसँ उत्पन्न शरीरक परबाहि नहि करैत ओ सजग आ सक्रिय रहबाक प्रयास करैत छलाह । ओ सर्वदा साहित्य-अध्ययन एवं लेखनमे लागल रहैत छलाह तथा नवीन पुस्तकक प्राप्तिक लेल व्यग्र भऽ जाइत छलाह ।

पं. जयनारायण झा 'विनीत'क जन्म १९०२ ई.क अक्टूबर मासमे दरभंगा जिलान्तर्गत नवादा नामक गाममे भेल छलनि। ई हिनक पितृ-मातृक छलनि जतऽ हिनक पिता स्थायी रूपेँ- रहिगेल छलथिन। हिनक जन्मक निश्चित तिथिक पता अनुसंधान कयलहुँपर नहि लागि सकल। कारण हिनक कोनो जन्मकुण्डली अथवा 'टिपनि' प्राप्त नहि भेल। आठे वर्षक अवस्थामे हुनक मायक मृत्यु भऽ गेलनि। अतः मातृविहीन भऽ जयबाक कारणे अपन मातृक कोर्थु गाममे रहबाक लेल ई विवश भऽ गेलाह। बादमे अपन पितृ-मातृक नवादामे, जतऽ जन्म भेल छलनि, रहऽ लगलाह।

पगुलबार बढ़ियाम मूलक मैथिल ब्राह्मण लतर झा दरभंगा जिलाक नवादा गामक माणिक झाक जमाय छलाह। हुनका तीन बालक छलथिन–नन्द किशोर झा, दुखहरण झा, आ रघुनन्दन झा। एहिमे रघुनन्दन झाकेँ दू बालक भेलथिन–जयनारायण झा तथा एकनारायण झा। विनीत'जीक अनुज एकनारायण झा सेहो स्वतंत्रता सेनानी छलाह। हुनक मृत्यु 'विनीत' जीसँ पूर्वे भऽ गेल छलनि। नन्द किशोर झा तथा दुखहरण झाक बालकक नाम क्रमशः भागवत नारायण झा आ शिवशंकर झा छनि। भागवत वावू जीवन पर्यन्त खादी तथा ग्रामोद्योग कार्यसँ सम्बद्ध रहलाह अछि। हुनक धर्मपत्नी स्व. फूलमायादेवी केँ खादी मसलिन सूतक कताइक लेल निरंतर अनेक वर्षधरि प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कारसँ अलंकृत कयल जाइत रहलनि। हुनका राष्ट्रपति ओ प्रधानमंत्री तथा विभिन्न प्रदेशक मुख्यमंत्री एवं राज्यपालक द्वारा पुरस्कार आ' प्रशस्ति-पत्र प्राप्त करबाक सौभाग्य प्राप्त छलनि। स्व. फूलमाया देवीकेँ सभबेर मेही ओ तेज सूत कटबामे प्रथम पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर भेटैत रहलनि। सम्पूर्ण देशक खादी नेता एवं कार्यकर्त्ता लोकनिमे ओ जानल-मानल महिला छलीह। ओ विनोबाजीक ततेक निकट सम्पर्कमे छलीह जे मृत्युसँ पूर्व जे पवनार आश्रममे सम्पूर्ण देशक खादी कार्यकर्त्ताक सम्मेलन ओ बजौने छलाह तकर अध्यक्षता करबाक लेल फूलमायादेवीकेँ आमंत्रित कयलनि। फूलमाया देलै स्वतंत्रता संग्राममे सक्रिय रहलीह तथा प्रादेशिक एवं राष्ट्रीय स्तरपर संगठित कतोक रचनात्मक संस्था सभसँ जीवनपर्यन्त जुटल रहलीह। श्री शिवशंकर झा राष्ट्रपति पुरस्कारसँ सम्मानित सेवानिवृत्त शिक्षक छथि। 'विनीतजी'क अनुज पत्नी रामदुलारी देवी सेहो स्वतंत्रता-संग्राममे सक्रिय छलीह तथा बेयालिसक क्रांतिमे भूमिगत भऽ फरारीक जीवन बितबैत गामे-गामे घूमि-घूमि कऽ महिलालोकनिक बीच क्रांतिक प्रचार एवं प्रसारमे संलग्न रहलीह। हुनका पुलिस पकड़ि नहि सकल।

कहबाक तात्पर्य जे विनीतजीक सम्पूर्ण परिवारक राष्ट्रीय आंदोलनमे महत्त्वपूर्ण भूमिका छलैक। मिथिलामे एहेन परिवार बिरले भेटि सकैछ। मुदा परिवारमे एक गोट अभाव एहिसँ रहलैक जे विनीतजी तथा हुनक अनुज एकनारायण झा केँ कोनो संतान नहि भेलनि।

'विनीत'जीक प्रारंभिक शिक्षा दरभंगा जिलाक कोर्थु ग्राममे भेलनि। तकर बाद

एही जिलांतर्गत मनीगाछीक निकटस्थ बलौर स्कूलसँ ओ मिड्लपरीक्षा पास कयलनि । लहेरियासराय (दरभंगा)क एम. एल. एकेडमीसँ १९२२ ई. मे विनीतजी इन्ट्रेंसक परीक्षा पास कयलनि । दरभंगामे विनीतजीक पिता एक अपर प्राइमरी पाठशालामे प्रधानाध्यापकक पद पर कार्यरत छलाह आ' हुनके संग विनीतजी रहैत छलाह । लहेरियासराय अयलापर एके वर्षक उपरान्त विनीतजीक पिता स्वर्गवासी भऽ गेलथिन आ' तकर बाद विनीतजी अपन पित्ती दुखहरणझाक आश्रयमे रहऽ लगलह ।

विनीतजीक मायक मृत्यु तँ पूर्वहि भऽ गेल छलनि । माय एवं पिताक मृत्युक कारण विनीतजीक शिक्षा लगभग दू वर्ष धरि वन्द रहलनि । मुदा विद्याध्ययन दिस हिनक विशेष अभिरुचि रहलाक कारणे ई लहेरियासरायमे प्राइभेट ट्यूशन करैत अपन पढ़वाक खर्चक व्यवस्था करैत रहलाह तथा अपन हाइस्कूलक अध्ययनक क्रमकेँ टूटऽ नहि देलनि । जखन 'विनीत'जी हाइस्कूलक दशम कक्षाक छात्र छलाह तखनिह महात्मागांधीक असहयोग आंदोलन प्रारंभ भेलैक आ ओ स्कूलसँ अपन सम्वन्ध तोड़ि आंदोलनमे कूदि पड़लाह ।

वादमे ओ उच्च विद्यालय एक राष्ट्रीय विद्यालयमे परिणत भऽ गेलैक । तखन विनीतजी पुनः असहयोग आंदोलनक समाप्तिपर ओही विद्यालयमे नामांकन करौलनि तथा ओतहिसँ इन्ट्रेंस परीक्षा पास कयलनि ।

एही समयमे राजनीतिक संग-संग साहित्य दिस सेहो विनीतजीक रुचि जगलनि । ओ पिंगल तथा अलंकार शास्त्रक विशेष रूपसँ अध्ययन एवं अभ्यास प्रारंभ कयलनि । ओहि समयमे ककरो कवि आ साहित्यकार वनवाक लेल ई आवश्यक मानल जाइत छलैक । बाल्यकालेसँ विनीतजीक झुकाव कविता विधा दिस अधिक छलनि । ओना छात्रावस्थामे विनीतजी नाटक लिखवामे सफल भेल छलाह । जखन विनीतजी प्रवेशिका-कक्षाक छात्र छलाह, तखनहि 'भारत-दुर्दशा' नाटकक आधार पर 'दुर्दैव-दमन' नामक एक हिन्दी नाटकक रचना कयने छलाह । ओहि समयमे 'पूर्णिमा' नामक एक छोट कविता-संग्रहक रचना सेहो कयने छलाह । मुदा दुर्भाग्यसँ स्वतंत्रता-संग्रामक क्रममे हुनक ई दुनू प्रारंभिक रचना कतहु नष्ट भऽ गेलनि । गांधीजीक असहयोग आंदोलन चौरा-चौरी कांडक करणे स्थागीत भऽ गेल छल । विनीतजी राष्ट्रीय विद्यालयसँ प्रवेशिका परीक्षा पास कयलाक बाद कांग्रेसी नेता लोकनिक द्वारा स्थापित बिहार विद्यापीठ, पटनामे अपन नामांकन करौलनि तथा ओतहिसँ १९२५ ई. मे राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र तथा इतिहास विषयक संग स्नातकस्तरक विद्यालंकारक परीक्षा पास कयलनि । बादमे 'विनीत'जी हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागसँ हिन्दीक विशारद परीक्षा सेहो पास कयलनि । बिहार विद्यापीठमे अध्ययन कयलासँ हिनका सभसँ पैध लाभ ई भेलनि जे हिनका राजेन्द्र वावू सहित बिहारक तत्कालीन कतोक प्रमुख नेता लोकनिक सम्पर्कमे अयवाक सुअवसर सहजहिं प्राप्त भेलनि । 'विनीत'जी केँ दरभंगाक, दू गोट महान नेता ब्रजकिशोर प्रसाद तथा धरणीधर वावूक

निकट सम्पर्कमे रहबाक सुयोग प्राप्त भेल छलनि। 'विनीत'जी एहि नेताद्वयसँ पूर्ण प्रेरणा प्राप्त कयने छलाह। चम्पारण-सत्याग्रहमे गांधीजीकेँ सहयोग देबाक कारणे ई दुनू नेता सम्पूर्ण देशमे विख्यात भऽ गेल छलाह। बिहार विद्यापीठमे पढ़बाक समय 'विनीत'जी श्रीरामदासजी गौड़क शिष्यक रूपमे बहुत लाभ उठौलनि। एतहि कविता लिखबाक दिस हिनक प्रवृत्ति जगलनि। हिनक रचना ओहि समयमे 'देश', 'महावीर', 'चाँद', 'वीरसंदेश' आदि पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत छलनि।

ब्रज किशोर बाबू आ' धरणीधर बाबूक आदेशपर 'विनीत'जी १९२६ ई. सँ १९३० ई. धरि (नोन-सत्याग्रह प्रारंभ हेबाक समय धरि) चारि वर्षक लेल समस्तीपुरक राष्ट्रीय विद्यालयमे अध्यापन कार्य कयलनि। ओहि समयमे राष्ट्रीय विद्यालयमे अध्यापन आ ओकर संचालन सेहो स्वतंत्रता आंदोलनक एक अंग मानल जाइत छलैक। असहयोग आंदोलनमे महात्मा गांधी देशभरिमे छात्रलोकनिकेँ अंगरेज द्वारा स्थापित ओ नियंत्रित विद्यालय, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालयक बहिष्कार करबाक आदेश देने छलथिन। ओकरे पूर्तिक स्वरूप राष्ट्रीय उच्च विद्यालय तथा उच्च शिक्षाक हेतु विद्यापीठक स्थापना देश भरिमे कयल गेल छलैक। एहि प्रकारक राष्ट्रीय शिक्षण संस्था सबमे कांग्रेसी स्वतंत्रता-सेनानी विद्वान् लोकनि अध्यापन एवं संचालनक कार्य करैत छलाह। स्वयं डां. राजेन्द्र प्रसाद बिहार विद्यापीठसँ अध्यापकक रूपमे सम्बद्ध रहलाह। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद एही विद्यापीठ सभक स्नातक लोकनि देशमे कतोक उच्च पदपर पदस्थापित भेलाह। स्व. प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री एहने विद्यापीठक स्नातक छलाह।

ई स्पष्ट अछि जे राष्ट्रीय विद्यालय एवं बिहार विद्यापीठ मे अध्ययन करबाक समयमे 'विनीत'जीक व्यक्तित्वक एक ठोस आधारक निर्माण भऽ गेलनि, जकर विकास आगाँ चलि कऽ एक महान् स्वतंत्रता-सेनानी एवं साहित्यिक हस्तीक रूपमे भेलनि। 'विनीत'जी बादक समयमे भारतक स्वतंत्रता आंदोलनमे सक्रिय भूमिकाक निर्वाह करैत साहित्य-सृजनक क्षेत्रमे प्रौढ़ता प्राप्त कयलनि। ई प्रारंभेसँ राष्ट्रभाषा हिन्दी तथा अपन मातृभाषा मैथिलीमे कविता आ निबंध लिखैत रहलाह।

'विनीत' जी असहयोग आंदोलनसँ प्रारंभ करैत भारतक स्वतंत्रताक अंतिम क्रांति बेयालिसक आंदोलन पर्यन्त सक्रिय भाग लैत रहलाह आ जहलक यात्रा करैत रहलाह। हिनक राजनीतिक कार्यक मुख्य क्षेत्र समस्तीपुर रहलनि, जतऽक नेता सत्यनारायण सिंहसँ हिनका बहुत घनिष्ठता छलनि। बिहार केशरी डॉ. श्रीकृष्णसिंहक बहुत कृपापात्र बनल रहलाह आ स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद तीन बेर विहार विधान सभाक सदस्य होइत रहलाह। विनीतजी पन्द्रह वर्ष धरि लगातार दरभंगा जिला कांग्रेस कामेटीक सदस्य आ' मंत्री रहलाह। बिहार प्रदेश कांग्रेस कामेटीक प्रतिनिधि बनैत रहलाह।

एक विधायकक रूपमे विनीतजी उपनामानुरूप विनयशील, कर्मठ, सक्रिय, जनताक आकांक्षाक प्रति सदति सचेत तथा व्यक्तिगत जीवनमे स्वच्छता, इमानदारी एवं सादगीक प्रतिमूर्ति छलाह। अपन चुनाव क्षेत्रक भ्रमण ओ सदति पैरेँ करैत छलाह। एक

विद्वान, साहित्यकार तथा संघर्षशील कांग्रेसी हेबाक कारणे हुनक बातकेँ विधान सभामे ध्यानसँ सूनल जाइत छलनि तथा सरकार ओहिपर अमल करबाक प्रयास करैत छल ।

राजनीतिक एवं स्वतंत्रता सेनानी हेबाक अतिरिक्त 'विनीत'जी राष्ट्रभाषा हिन्दी आ अपन मातृभाषा मैथिलीक सम्मानित साहित्यकार छलाह । ओ छात्रावस्थेसँ निरंतर साहित्य-साधनामे लागल रहलाह । विनीतजी प्राकृतिक सौंदर्यक स्नेही तथा अत्यंत भावुक छलाह । साहित्य क्षेत्रमे ओ मुख्यतया कवि छलाह । एहि शताब्दीक द्वितीय दशकक अंत आ' तृतीय-दशकक बीचमे विनीतजकेँ हिन्दीक कविताक लेल बेनीपुरी, मोहनलाल महतो 'वियोगी', जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज', रामलोचन शर्मा 'कंटक', भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' तथा प्रफुल्ल चन्द्र ओझा 'मुक्त'क समकक्ष बिहारक नवतुरिया कविलोकनिकमे मानल जाइत छलनि । बादमे हिन्दीक संग-संग 'विनीत'जी मैथिलीमे कविता लिखऽ लगलाह आ जीवन पर्यन्त जे कोनो पत्र-पत्रिका मैथिलीक प्रकाशित होइत रहलैक ताहिमे हुनक कविता छपैत रहलनि । हिनक साहित्यिक अवदान पर आगाँ विस्तारसँ चर्चा करब ।

'विनीत'जीकेँ राष्ट्रभाषाक दीर्घकालीन सेवाक लेल विहार सरकारक राजभाषा विभाग राजकीय सम्मानसँ पुरस्कृत कयलकनि । अपन मातृभाषा मैथिलीक सेवाक लेल हिनका १९८२ ई. मे पटनाक चेतना समिति द्वारा ताम्रपत्र देल गेलनि तथा १९८३ ई. मे दरभंगाक 'संकल्पलोक' मिथिला-विभूति उपाधिसँ अलंकृत कयलकनि । १९८६ ई. मे दरभंगाक 'विद्यापति सेवा संस्थान' द्वारा 'विनीत'जीकेँ सम्मानित कयल गेलनि आ' प्रशस्ति पत्रमे हिनका 'कवि पुंगव' उपाधिसँ अलंकृत कयल गेलनि ।

सक्रिय राजनीति, स्वतंत्रता संग्राम आ' साहित्य-सृजनक एक व्यक्तिमे एहेन त्रिवेणी संगम एहि देशमे बहुत थोड़ भेल अछि । विनीतजीक दीर्घकालीन जीवन सेहो एहि स्थितिकेँ उपस्थित करबामे सहयोग देलक अछि ।

'विनीत'जी एक बेर गंभीर रूपसँ दुखित भऽ दरभंगाक मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे भर्ती भेलाह । ओहि समयमे 'विनीत'जी बिहार विधान सभाक एक सम्मानित सदस्य छलाह तथा बिहारक मुख्यमंत्री बिहार केशरी श्रीकृष्ण सिंह छलाह । श्रीबाबू स्वयं दरभंगा अस्पताल आबि 'विनीत'जीक उचित चिकित्साक आदेश देलथिन । 'विनीतजी'क मुख्य चिकित्सककेँ श्रीबाबू कहलथिन जे जखने विनीतजी पूर्ण स्वस्थ भऽ जयताह तखने हुनक पदोन्नति, जे बिहार सरकारक समक्ष लम्बित छलनि, कयल जयतनि । स्वाभावतः ओ चिकित्सक 'विनीत'जीक चिकित्सा ओ सेवामे जुटि गेलाह, जाहिसँ ओ बहुत शीघ्र स्वस्थ भऽ अस्पतालसँ मुक्त भऽ गेलाह ।

ओकर बाद अंतमे विनीतजी बीमार भऽ पटना मेडिकल कॉलेज अस्पतालमे कॉटेज वार्डमे भर्ती भेलाह आ ओतऽसँ ठीक भऽ गाम फिरलाह । मुदा १४ फरबरी १९९१ केँ हुनक जीवन लीला समाप्त भऽ गेलनि ।

'विनीत'जीक स्वाभाव फूल सन कोमल, गंगाजल सन निर्मल आ स्वच्छ छलनि ।

गांधी-पीढ़ीक एक राजनीतिक नेतामे जे गुण सभ होयबाक चाही से हुनकामे प्रचुर मात्रामे विद्यमान छलनि । वैयक्तिक जीवनमे सादगी, स्वच्छता आ' सरलताक ओ निष्ठापूर्वक पालन कयलनि । विधान सभाक सदस्य रहितहुँ 'विनीत'जी कहियो कोनो वाहनक उपयोग नहि करैत छलाह । पयरेँ चलबाक हुनक एहेन अभ्यास छलनि जे ओ सकरी रेलवे टीशनसँ अपन गाम नवादा, जकर दूरी एकैस–बाइस किलोमिटरसँ कम नहि अछि, अपन क्षेत्रक कतोक गामक लोकक कुशल-क्षेम पुछैत एवं खोज-पुछारि करैत जाइत छलाह । कनहापर एक झोरा लटकौने 'विनीत'जी ओहि समयमे अपन सगर चुनाव-क्षेत्र घूमि जाइत छलाह । चुनावक समयमे सेहो ओ कहियो जिप गाड़ी अथवा ताँगाक उपयोग प्रचाारकार्य करबाक लेल नहि कयलनि । इएह सभ कारण छल जे ओ अपन चुनाव क्षेत्र तथा सम्पूर्ण मिथिलांचलमे अत्यंत लोकप्रिय रहलाह ।

अपन एक नमहर साहित्यिक ओ राजनीतिक जीवनमे विनीतजीकेँ कहियो कोनो साहित्यकार, राजनीतिक नेता एवं कार्यकर्तासँ मनोमालिन्य नहि भेलनि । ओ कहियो कोनो साहित्यिक गोल-बन्दी तथा राजनीतिक गुटबंदीमे नहि फँसलाह । एहि सम्बन्धमे ओ अजातशत्रु छलाह । हिनका कहियो कोनो पद भेटलनि अथवा उचित अवसरसँ वंचित कऽ देल गेलनि, एहि दुनू स्थितिमे ई स्थितिप्रज्ञ जकाँ समान रूपसँ शांत एवं धैर्यवान् बनल रहलाह । ककरो प्रति व्यक्तिगत द्वेष अथवा वैमनस्य नहि भेलनि ।

अपन जीवनक आठम दशकमे अयलोपर अध्ययन एवं लेखन कार्य निरंतर चलैत रहलनि । अपन मातृभाषा मैथिलीक मंदिरमे कविता-सुमन चुनि-चुनि कऽ चढ़वैत रहलाह । मुदा नव पीढ़ीक राजनीतिक नेता एवं कार्यकर्त्तालोकनिक कार्यशैलीसँ अत्यंत दुखी ओ क्षुब्ध रहैत छलाह । हुनका अपन कांग्रेसदलक भविष्यक चिंता स्वाभाविके रहैत छलनि । विनीतजीसँ क्यो भेट कऽ एक नव स्फूर्ति, प्रेरणा, जीवनक प्रति एक नूतन दृष्टिकोण तथा सेवाभावक शिक्षा प्राप्त कऽ आपस होइत छल ।

हुनक मैथिली कविता-संग्रह 'विनीत-भारती'क विमोचनक अवसरपर श्री यात्री बजलाह जे 'पं. जयनारायण झा 'विनीत' मैथिली साहित्यक मैथिलीशरण गुप्त छलाह ।'

पं. जयनारायण झा 'विनीत'क जीवन आ व्यक्तित्वक एहि अध्यायकेँ हम श्री चन्दनाथ मिश्र 'अमर'क एहि कथनसँ समाप्त करऽ चाहैत छी जे ओ 'महात्मा गांधीक सिद्धान्तक एकनिष्ठ अनुगामी, स्वतंत्रता संग्रामक अथवा राष्ट्र भारतीक प्रति अपार श्रद्धाशील, मातृभाषा-मंदिरक अनन्य उपासक, प्रारंभमे चौदह वर्ष धरि बिहार विधान सभामे मिथिलांचलक जन-प्रतिनिधि रूपमे निर्वाचित पूर्व विधायक, ''अग्रतः सकलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः'' एहि वाक्यकेँ चरितार्थ कयनिहार मनीषी, 'विद्याददाति विनयम्' एहि वाक्यक मूर्तिमान् व्यक्तित्व ...'' छलाह ।

राष्ट्रसेवा एवं रचनात्मक कार्य

पूर्वहि कहल अछि जे पं. जयनारायण झा 'विनीत'क जीवनक मुख्य दू गोट धारा छल; एक साहित्य ओ दोसर राष्ट्रसेवा एवं रचनात्मक कार्य। विनीतजी छात्रावस्थेमे महात्मा गांधीक प्रभावमे आवि राष्ट्रसेवाक व्रत लऽ लेलनि आ से जीवन पर्यन्त ओकर निर्वाह करैत रहलाह। स्वतंत्रताँ पूर्व एहि देशमे राष्ट्रसेवाक प्रधान कार्य छल स्वातंत्र्य-आदोलनमे सक्रिय भाग लेव। १९२० ई. क मध्यकालमे देश भरिमे असहयोग आंदोलनक बसात जोरसँ बहि रहल छलैक। २८ आ २९ अगस्तकेँ राजेन्द्र प्रसादक अध्यक्षतामे बिहार प्रान्तीय सम्मेलनक बारहम अधिवेशन भागलपुरमे आयोजित भेलैक, जाहिमे महत्त्वपूर्ण निर्णय सभ लेल गेलैक। राजेन्द्र बाबू अपन भाषण हिन्दीमे करैत असहयोग आंदोलन पर विशेष जोर देलनि। असहयोग सम्बन्धी प्रस्ताव दरभंगाक ओकील धरणीधर बाबू प्रस्तुत कयलनि जे अपार बहुमतसँ स्वीकृत भेलैक।

ओही वर्ष गांधीजीक बिहार-यात्रा दिसम्बर मासमे भेलनि, जाहिसँ एतऽ असहयोग आंदोलनकेँ बहुत बल भेटलैक तथा सम्पूर्ण बिहार प्रान्तमे एक अपूर्व उत्साहक लहरि पसरि गेलैक। एहि क्रममे गांधीजी दरभंगा अयलाह। हुनकर दर्शन एवं भाषणक प्रभाव 'विनीत'जी पर गंभीर रूपसँ पड़लनि। ओहि समयमे 'विनीत'जी लहेरियासराय स्थित सरस्वती एकेडमीक छात्र छलाह। 'विनीत'जी असहयोग आंदोलनमे भाग लेबाक हेतु अपना स्कूलक बहिष्कार कऽ देलनि आ स्वतंत्रता-संग्राममे पूर्णरूपेण सक्रिय भऽ गेलाह। ओहि आंदोलनमे सक्रिय भाग लेलाक बादो किशोरावस्थामे रहलाक कारणे ओ पुलिसक नजरिसँ बचि गेलाह। ओहि आंदोलनमे हुनका जहल नहि जाय पड़लनि। असहयोग आंदोलनक कार्यक्रममे निष्ठापूर्वक भाग लेबाक कारणे बिहार आ खास कऽ मिथिलांचल सरकारी दमन-चक्र केँ शांति एवं धैर्य संग सहन कऽ रहल छल। सम्पूर्ण देशमे ई आंदोलन व्याप्त भऽ गेल छल। मुदा ओही बीचमे एकगोट अप्रत्याशित घटना घटित भऽ गेलैक। दू फरवरी १९२२ ई. केँ तत्कालीन संयुक्त प्रांतक गोरखपुर जिलांतर्गत चौरीचौरा मे थाना मे एक क्रुद्ध भीड़ आगि लगा देलकैक तथा बाइस पुलिस जवान ओहिमे जिविते जरि कऽ

117118
9.12.04

मरि गेल । गांधीजीक अहिंसात्मक कार्यक्रमकेँ एहि घटनासँ बड़ पैघ ठेस पहुँचल । गांधीजीक मानसपर एहिसँ भारी आघात भेलनि । ओ तुरंत असहयोग आंदोलनकेँ स्थगित करबाक निर्णय लेलनि । हुनक तर्क छलनि जे एखन देश अहिंसात्मक संघर्षक लेल उचित रूपसँ प्रशिक्षित नहि भेल अछि ।

गांधीजीक एहि निर्णयसँ कांग्रेसी नेता एवं कार्यकर्ता लोकनिमे क्षोभ भेलनि । देशमे राष्ट्रीयताक जे एक गोट आवेग उठल से सहसा दबि गेल । मुदा कांग्रेस कार्य समिति गांधीजीक निर्णयकेँ मानि लेलक । आंदोलन स्थगित भऽ गेलाक उपरान्त 'विनीत' जी सरस्वती एकेडमीक नवीन परिवर्त्तित रूप राष्ट्रीय विद्यालयमे अपन नामांकन पुनः करा लेलनि आ जेना कि ऊपर कहल गेल अछि, ओ ओतहिसँ प्रवेशिका परीक्षा पास कयलनि ।

कतोक कारणसँ १९२८ ई. मे देश भरिमे राजनीतिक गतिविधिमे एक नवीन मोड़ उपस्थित भऽ गेलैक । १९२७ ई. क पूर्वार्द्धमे इंगलैंड मे प्रकाशित कुमारी कैथराइन मेयोक पुस्तक 'मदर इंडिया' सँ सम्पूर्ण भारत क्षुब्ध भऽ उठल छल, कारण ओ लेखिका भारतीय जीवनक एक घिनौन चित्र जानि बूझि कऽ अपन पुस्तकमे प्रस्तुत कयने छलि । भारतीय समाचारपत्र सबहिमे प्रतिक्रियास्वरूप ओकर वृहत्रूपसँ भर्त्सना कयल गेलैक । स्वभावतः ई विश्वास कयल गेलैक जे एहेन पुस्तक लिखबाक लेल अंगरेज सरकार द्वारा मिस मेयोकेँ प्रेरित कयल गेलैक तथा सहायता देल गेलैक जाहिसँ दुनियाक आँखिमे भारतकेँ स्वशासन चलयबाक लेल अयोग्य साबित कयल जाइक । एही बीच ८ नवम्बर १९२७ इस्वीकेँ ब्रितानी संसद तथा भारतक तत्कालीन वायसराय लार्ड इरविन भारतमे संवैधानिक सुधारक लेल एक सरकारी आयोगक नियुक्तिक घोषणा कयलक । एहि आयोगक अध्यक्ष ब्रिटेनक एक प्रख्यात संविधान-विशेषज्ञ सर जॉन साइमनकेँ बनाओल गेलनि तथा ओहिमे छओ गोट अन्य सदस्य राखल गेलाह ।

मुदा एहि आयोगमे एकोगोट भारतीय सदस्यकेँ नहि रहबाक कारणे सम्पूर्ण देशमे भारी रोष प्रकट कयल जायब स्वाभाविके छल । एहि आयोगक मुख्य कार्य मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारक कार्यान्वयनक जाँच करब तथा देशक भावी संवैधानिक सुधारक लेल अनुशंसा करब छलैक । १९२७ इस्वीक दिसम्बर मासमे आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक बेयालिसम अधिवेशनमे ई संकल्प लेल गेलैक जे ''भारतक स्वाभिमानक रक्षाक लेल एकमात्र मार्ग प्रत्येक चरणमे आओर प्रत्येक ढंगसँ आयोगक बहिष्कार करबेटा रहि गेल अछि ।'' १९२८ इस्वीक दिसम्बर मासमे आयोजित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक कलकत्ताक अधिवेशनमे अपन अध्यक्षीय भाषणक क्रममे पं. मोतीलाल नेहरू जनौलनि जे ''उत्तरदायित्वपूर्ण सरकार स्थापित करबाक पवित्र वचनक अन्त बहुत पैघ धोखाबाजीमे भेल अछि । 'स्टैच्युटरी' कमीशन जे एखन हमरा देशमे घूमि रहल अछि ओकर पदचिह्न पर फूटल कपाल एवं टूटल हड्डी पड़ल अछि ।''

साइमन कमीशनक प्रति अपनाओल गेल नीतिक सम्बन्धमे कांग्रेसक निर्णयकेँ बिहारमे पूर्ण साहस, निष्ठा ओ भक्तिक संग पालन कयल गेलैक। पटनामे सर अली इमामक अध्यक्षतामे एक सर्वदलीय सम्मेलन भेलैक, जाहिमे सर्वमतेन निर्णय भेलैक जे बिहार अयलापर कमीशनक पूर्ण बहिष्कार कयल जाय।

१९२८ इस्वीक १२ दिसम्बरकेँ साइमन कमीशन पटना पहुँचल। ओकर विरोध-प्रदर्शनमे प्रांत भरिसँ दूर-दूरसँ आयल लोक भाग लेलक। दिसम्बर मासक सिहरैत सर्दीमे अहल भोरे हार्डिंजपार्कक सामने विशेष प्लाटफार्मक समक्ष आयोगक विरुद्ध अपन भावनाकेँ व्यक्त करबाक हेतु लगभग तीस हजार लोक ठाढ़ छल। प्रदर्शन पूर्णतया शांतिपूर्ण छल। एहि प्रदर्शनमे भाग लेबाक लेल उपस्थित प्रथम पंक्तिमे 'विनीत'जी ठाढ़ छलाह। ओ ओहि समयमे समस्तीपुरक राष्ट्रीय विद्यालयमे अध्यापक छलाह। ओही समयमे 'विनीत' जी समस्तीपुरकेँ अपन राजनीतिक गतिविधिक केन्द्र बनौने छलाह। ओ ओतहिसँ स्वयंसेवक लोकनिक एक पैघ जत्थाक नेतृत्व करैत पटना पहुँचल छलाह। 'साइमन कमीशन वापस जो'क नारासँ समस्त पटना आ बिहार गुंजायमान भऽ उठल छल। कमीशन १९ दिसम्बरकेँ पटनासँ कलकत्ताक लेल विदा भऽ गेल।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसक चौबालिसम अधिवेशन लाहौरमे १९२९ इस्वीक २९सँ ३१ दिसम्बर धरि पं. जवाहरलाल नेहरूक अध्यक्षामे पूर्ण स्वराज्यक प्रस्ताव पारित करैत एक नवीन उत्साह एवं उमंगक वातावरणमे सम्पन्न भेल। १९२९ इस्वीक अंत धरि सम्पूर्ण देशमे स्वतंत्रताक लेल अदम्य तृष्णा जाग्रत भऽ चुकल छलैक। महात्मा गांधीक नेतृत्वमे सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हेबाक कारणे भारतीय इतिहासमे १९३० इस्वी सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वर्ष सिद्ध भेल। १९३० इस्वीक १२ मार्चकेँ साढ़े छओ बजे प्रातःकाल ७८ गोट स्वयंसेवकक संग गांधीजी अपन ऐतिहासिक 'दांडी मार्च' प्रारंभ कयलनि। एहिमे बिहार सहित विभिन्न प्रांतसँ स्वयंसेवक आयल छलाह। २४१ मीलक दूरी चललाक बाद गांधीजी २ अप्रैलकेँ दांडी पहुँचलाह। ६ अप्रैलकेँ दांडी समुद्र तटपर अपन अनुयायी लोकनिक संग ओ नोन बनौलनि आ नोन कानूनकेँ भंग कयलनि। गांधीजी लिखने छथि–"१९२० क आह्वान तैयारी करबाक आह्वान छल। आइ एहि अंतिम संघर्षमे लागि जयबाक आह्वान थिक।"

१९३० इस्वीक ६ अप्रैल नोन सत्याग्रह आरंभ करबाक लेल निर्धारित तिथि छल। दरभंगा जिलामे सत्यनारायण सिंहक नेतृत्वमे १७ अप्रैलकेँ दरभंगा नगरसँ पिपराघाट नोन कानून भंग करबाक लेल स्वयंसेवकक जत्था चलल। ओही दिन सत्यनारायण सिंह आ पं. रामनन्दन मिश्रकेँ गिरफ्तार कऽ डेढ़ वर्षक सजाय सुना जहल पठा देल गेलनि। एहिसँ समस्त जिलामे उत्साहक लहरि पसरि गेल। पिपरामे नित्य नोन बनऽ लागल आ ओकर विक्रीसँ बेश नगद राशि प्राप्त होमऽ लगलैक।

एहि समय धरि जयनारायण झा 'विनीत' तत्कालीन दरभंगा जिलाक समस्तीपुर अनुमंडलमे एक वरिष्ठ एवं लोकप्रिय राष्ट्रसेवक भऽ गेल छलाह । ओ विभिन्न स्थानमे घूमि-घूमि कऽ नोनी माटिक संग्रह करऽ लगलाह आ' अपन सहयोगी स्वयंसेवक लोकनिक संग नोन बनबऽ लगलाह । एहि क्रममे हुनका १९३० इस्वीमे समस्तीपुरमे गिरफ्तार कऽ छओ मासक सजाय सुना जहल पठा देल गेलनि । सरकारक द्वारा कठोर नीतिक अछैतो सविनय अवज्ञा आंदोलन पूर्ण उत्साहपूर्वक चलैत रहल । आंदोलनक बीचमे वायसराय ई घोषणा कयलनि जे अक्टूबरमे लंदनमे एक गोलमेज सम्मेलन होयत । ओहि अनुसार १९३० इस्वीक १२ नवम्बरकेँ रैम्जेमैक्डोनाल्डक अध्यक्षतामे लंदनमे प्रथम गोलमेज सम्मेलन आयोजित भेलैक । एहिमे देशभरिक नबासी गोट प्रतिनिधि सम्मिलित भेलाह । मुदा कांग्रेस ओकर बहिष्कार कयलक । तेँ ओहि सम्मेलनकेँ कोनो सफलता प्राप्त नहि भेलैक । ओहि सम्मेलनमे कांग्रेसक पूर्ण स्वाधीनताक मांग पर कोनो विचार नहि कयल गेलैक ।

प्रथम गोलमेज सम्मेलनक विफलतासँ ब्रिटिश सरकार ई बात बुझलक जे कांग्रेसक सहयोगक बिना भारतक कोनो राजनीतकि समस्याकेँ नहि सोझराओल जा सकैत छैक । फलस्वरूप अंगरेजी शासनकेँ कांग्रेसक संग समझौता करबाक लेल बाध्य होअऽ पड़लैक तथा १९३१ इस्वीक ५ मार्चकेँ गांधी-इरविन समझौता सम्पन्न भेल । कांग्रेस एहि समझौताक अनुसार सविनय अवज्ञा आन्दोलनकेँ स्थगित करबाक शर्त मानि लेलक । निकट भविष्यमे अंगरेज द्वारा आयोजित गोलमेज सम्मेलनमे भाग लेबाक बातकेँ सेहो कांग्रेस मानि लेलक । १९३१ इस्वीक मार्चमे आयोजित कराँची कांग्रेस अधिवेशनमे उक्त समझौताकेँ अनुमोदन प्राप्त भऽ गेलैक आ' कांग्रेस महात्मा गांधीकेँ द्वितीय गोलमेज सम्मेलनमे शामिल हेबाक लेल अपन एकमात्र प्रतिनिधि नियुक्त कयलक ।

गांधी-इरविन समझौताक फलस्वरूफ अन्य असंख्य स्वतंत्रता-सेनानीक संग जयनारायण झा 'विनीत' सेहो जहलसँ मुक्त भऽ गेलाह ।

एहि बीचमे लार्ड इरविनक स्थान पर लार्ड विलिंगडन भारतमे वायसराय नियुक्त कयल गेलाह । ओ जिद्दी एवं टेढ़ व्यक्ति छलाह तथा गांधी-इरविन समझौताक प्रति कोनो सहानुभूति हुनका हृदयमे नहि छलनि । फलस्वरूप ब्रिटिश नौकरशाही ओहि समझौताक शर्त सबहिकेँ भंग करब प्रारंभ कऽ देलक । द्वितीय गोलमेज सम्मेलनमे भाग लेबाक हेतु गांधीजी १९३१ इस्वीक २९ अगस्तकेँ लंदनक लेल विदा भेलाह । ओ सम्मेलन दिसम्बर मासमे समाप्त भेलैक । ओ असफल रहलैक, जकर मुख्य कारण छलैक ब्रिटिश सरकारक विरोधी रुखि । १९३१ इस्वीक २८ दिसम्बरकेँ महात्मा गांधी खाली हाथ स्वदेश आपस आबि गेलाह । ओहि समयमे सम्पूर्ण देशमे सरकारक दमन-चक्र जोरसँ चलि रहल-छल । खान अब्दुल गफ्फार खाँ तथा पं. जवाहरलाल नेहरू केँ गिरफ्तार कऽ लेल गेल छलनि ।

फलस्वरूप कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलनकेँ पुनः चालू करबाक निर्णय लेलक। सरकार कांग्रेसकेँ गैर कानूनी घोषित कयलक।

सविनय अवज्ञाक एहि दोसर चरणमे पुनः 'विनीत'जी समस्तीपुरमे १९३२ इस्वीक २७ जनवरीकेँ गिरफ्तार भऽ जहल चल गेलाह तथा हुनका एहि बेर चारि मासक सश्रम कारावासक सजाय देल गेलनि। ओहि वर्ष २३ मार्च धरि सम्पूर्ण विहारमे ६५०० व्यक्ति जहलमे बन्द भऽ गेल छलाह। अप्रैल मासक मध्य धरि सम्पूर्ण देशमे सत्तरि हजार लोक जहल चल गेल छल। एहीसँ ओहि आंदोलनक व्यापकताक अनुमान लगाओल जा सकैत अछि।

मिथिलांचलमे राष्ट्रीयताक भावना ततेक उद्दाम छल जे कतबो पुलिस नङटे नचैत छल, स्वंयसेवक पर बरखाक बुन्द जकाँ गोली झहरैत छलैक, मुदा तैयो आंदोलनकेँ आगू बढ़ेवाक लेल कखनहुँ कार्यकर्ताक अभाव नहि भेलैक। एहि समयमे स्वयंसेवक लोकनि डाकघर तथा बैंकमे धरना देबाक कार्यक्रममे लागि गेल छलाह। एहि कार्यक्रम सभक बीच 'विनीत'जी पुनः १९३२ इस्वीक २२ नवम्बरकेँ गिरफ्तार भऽ जहल चल गेलाह। एहि बेर हुनका एक वर्षक सश्रम कारावासक सजाय भेटलनि। संघर्षक एही बीचमे 'विनीत'जीकेँ १९३० इसवीमे वैवाहिक सम्बन्धमे बान्हि देल गेलनि। विवाहक अपरिहार्यता ई छल जे विना हिनक विवाह भेने हिनकर अनुजक विवाह संभव नहि होइतनि आ एहि तरहेँ हिनक वंश आगू नहि वढ़ि सकितनि। हिनक विवाह दरभंगा जिलाक हरिपुर गामक रामअनुग्रह झाक सुपुत्री गुलाब देवीक संग भेलनि।

कांग्रेसक भावी नीति निर्धारण करबाक लेल जहलसँ बाहर भेल प्रमुख कांग्रेसी लोकनिक एक सम्मेलन १९३३ इस्वीक १२-१३ जुलाइकेँ पूनामे आयोजित भेलैक, जाहिमे विभिन्न प्रांतक लगभग डेढ़ सय प्रतिनिधि सम्मिलित भेल छलाह। गांधीजीक विचारसँ कांग्रेस सविनय अवज्ञा आंदोलन स्थगित करबाक निर्णय लेलक। मुदा व्यक्तिगत रूपसँ ओहि आंदोलन मे सक्रिय रहबाक अनुमति देल गेलैक। मिथिलांचलमे असंख्य लोक एहि आंदोलनमे व्यक्तिगतरूपसँ भाग लेब आरंभ कयलक आ जहल यात्रा करऽ लागल। शहरेटामे नहि, ग्रामीण क्षेत्रो मे कपड़ा आ नशावला वस्तुक दोकान सभपर धरना देबाक कार्यक्रम चलैत रहल। हरिजन कार्यक लेल १९३४ इस्वीमे गांधीजीक यात्रा बिहारमे होइतनि। मुदा १५ जनवरी १९३४केँ सबा ३ बजे अपराह्णमे बिहारमे भीषण भूकंप भेलैक। ओहिमे बीस हजारसँ ऊपर लोक हताहत भेल। कतोक हजार वर्गमील क्षेत्रमे विध्वंसक लीला अभूतपूर्व एवं वर्णनातीत छल। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद १७ जनवरीकेँ हजारीबाग जहलसँ रिहा भेला तथा भूकंप-पीड़ित लोकक लेल सहायता कार्यमे जुटि गेलाह। मुंगेर शहर सभसँ अधिक प्रभावित भेल छल। गांधीजी तथा पं. जवाहर लाल नेहरू मिथिलांचलक यात्रा कयलनि। गांधीजी ११ मार्चकेँ पटना अयलाह आ राजेन्द्र

बाबूक संग १४ मार्चकेँ मोतिहारी गेलाह तथा ओतऽ ग्रामीण क्षेत्रक यात्रा कयलनि। तकर बाद गांधीजी मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, राजनगर आ भागलपुर गेलाह। भूकम्प-पीड़ितक बीच कार्य करबाक मानवतावादी अभियानमे कांग्रेस परसँ पाबन्दी हटा लेल गेलैक। ओकर कार्यकर्त्तालोकनि सहायता एवं पुनर्वासक कार्यमे जुटि गेलाह। जयनारायण झा 'विनीत' एहि कार्यमे पूर्ण रूपेण सक्रिय छलाह। कांग्रेसक कार्यकर्त्तालिकनिकेँ जनतामे लोकप्रिय हेबाक ई एक ईश्वरप्रदत्त अवसर भेटल छलनि। जयनारायण झा 'विनीत' एहि अवसरक पूर्ण लाभ उठौलनि।

उक्त मानवतावादी कार्यक सम्पादनक उपरांत कांग्रेसकेँ अपन संगठनकेँ सभ स्तर पर पुनर्जीवित आ ठोस बनेबाक अवसर प्राप्त भेलैक। सत्यनारायण सिंह जे पश्चात् काल जवाहरलालक मंत्रिमंडलमे संचार मंत्री बनलाह तनिका पुरना दरभंगा जिलाक कांग्रेस कमिटीक अध्यक्ष बनाओल गेलनि। ओ ओहि पदकेँ १४-१५ वर्ष धरि सुशोभित कयलनि। हुनका संग ओहि जिलाक मंत्री पद पर 'विनीत'जी तावत धरि रहलाह जावत धरि ओ स्वतंत्र भारतमे विहार विधान-सभाक सदस्य निर्वाचित नहि भेल छलाह। बीचमे 'विनीत'जी कांग्रेसक टिकट पर दरभंगा जिला बोर्डक सदस्य निर्वाचित भेलाह तथा दरभंगा लोकल बोर्डक अध्यक्ष बनलाह। मुदा १९४१ इस्वीक 'व्यक्तिगत-सत्याग्रह' मे भाग लेबाक हेतु 'विनीत'जीकेँ एहि दुनू पदसँ त्यागपत्र देमऽ पड़लनि।

१९३९ इस्वीमे पुनः भारतक लेल एक संकटपूर्ण स्थिति आयल। ओहि वर्ष सितम्बर मासमे द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारंभ भऽ गेलैक। भारतकेँ बिना पुछनहि ब्रिटिश सरकार एहि देशकेँ युद्धमे झोंकि देलकैक। युद्ध द्रुतगतिसँ चलि रहल छल। भारतक संवैधानिक समस्याक समाधानक कोनो आशा नहि छल। ओहि समयमे १९४० इस्वीमे विहारक रामगढ़क ऐतिहासिक कांग्रेस अधिवेशन खूब धूमधामसँ १९ आ २० मार्चकेँ आयोजित भेलैक। ई कांग्रेस गांधीजीक नेतृत्वमे संघर्ष करबाक लेल राष्ट्रक आह्वान कयलक। सत्याग्रह प्रारंभ करबाक प्रस्ताव पं. जवाहरलाल नेहरू रखलनि, जे अपार बहुमतसँ पास भेल। प्रस्ताव पर भाषण करैत गांधीजी वजलाह–"सविनय अवज्ञा यदि ठीकसँ प्रारंभ होयत आ चलाओल जायत तँ निश्चय हमरालोकनिकेँ स्वतंत्रता प्राप्त होयत।" गांधीजीक विचार व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ करबाक छलनि। १७ अगस्तकेँ बम्बइ कांग्रेस-अध्यक्ष मौलाना अबुल कलाम आजाद प्रांतीय कांग्रेस कमिटीक अध्यक्ष एवं सचिव तथा भूतपूर्व कांग्रेस मंत्री लोकनिक एक बैसक बजौलनि। ओहि बैसकमे व्यक्तिगत सत्याग्रह करबाक गांधीजीक निर्णय पर प्रकाश देल गेलैक। एहिमे गांधीजी द्वारा मनोनीत व्यक्तिकेँ व्यक्तिगतरूपसँ एकसर सत्याग्रह करबाक छलनि। सम्पूर्ण कार्यक्रम मासाभ्यंतरे पूर्ण भऽ जयबाक सम्बन्धमे सेहो निर्णय लेल गेलैक। गांधीजी द्वारा प्रस्तुत सत्याग्रह चलयबाक ई एक नवीन शैली छल।

गांधीजी बिनोबा भावेकेँ प्रथम सत्याग्रही मनोनीत क्रयलनि । बिनोबाजी १९४० इस्वीक १७ अगस्तकेँ वर्धासँ लगभग सात मील दूर स्थित पौनार नामक गाममे व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ कयलनि । ओ २१ अगस्तकेँ गिरफ्तार भेलाह । दोसर सत्याग्रही पं. नेहरू सत्याग्रह प्रारंभ करबासँ पूर्व गिरफ्तार कऽ चारि सालक सजायक संग जहल पठा देल गेलाह ।

मिथिलांचलमे व्यक्तिगत सत्याग्रह मोतिहारी, रोसड़ा, शिवहर, मधुबनी तथा दरभंगामे व्यापकरूपसँ चलल । अतएव ओहि सभ स्थानमे पुलसिक दमनचक्र सेहो अधिक तेजगतिसँ चललैक । पं. जयनारायण झा 'विनीत' एहि व्यक्तिगत सत्याग्रहक क्रममे अपन थाना मुख्यालय बहेड़ामे गिरफ्तार भेलाह आ हुनका एक बरखक जहलक सजाय देल गेलनि ।

व्यक्तिगत सत्याग्रहकेँ बहुत अधिक दिनधरि चलायब संभव नहि छलैक । दोसर दिस विश्वयुद्ध सेहो एक भयानक स्थितिमे पहुँचि गेल छलैक । जापानी फौजक धमक भारतमे कर्णगोचर होमऽ लागल छलैक । कांग्रेस व्यक्तिगत सत्याग्रहकेँ स्थगित कऽ देलक । परञ्च पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करबाक ओकर मांग पूर्ववते स्थिर रहलैक । १९४२ इस्वीक मार्चमासमे ब्रिटिश सरकार भारतमे संवैधानिक सुधारक लेल क्रिप्स मीशन भारत पठौलकैक । ओहि प्रस्तावमे भारतकेँ स्वतंत्र करबाक बदलामे ओकरा खंड-विखंड कऽ देबाक योजना छलैक । महात्मा गांधीकेँ आब विश्वास भऽ गेलनि जे ब्रिटिश सरकारक शासन आ फूट दुनू एके वस्तु थिक । आ तेँ ओ अपन नारा देलनि जे "अंगरेज ! भारत छोड़ि दिअ; अंगरेज भारत छोड़ि दिअ" । देशक असंख्य कंठसँ ई नारा बाजि उठल । एहि प्रस्तावक अनुमोदनक लेल वम्बइ मे ७ अगस्त १९४२ केँ अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटीक बैसार भेलैक । प्रस्ताव लगभग सर्वसम्मतिसँ पास भेलैक । २४० सदस्यमे मात्र तेरह गोटे प्रस्तावक विरोधमे हाथ उठौने छलाह । आब बैसक ८ अगस्तक बारह बजे रातिधरि चलैत रहल ।

प्रस्ताव पारित भेलाक बाद गांधीजी अढ़ाइ घंटा धरि हिन्दी आ अंगरेजीमे भाषण करैत रहलाह । 'ओ करू अथवा मरू' ('डू और डाइ') क अपन मंत्रक उच्चारण करैत बजलाह–"हमरालोकनि खाहे भारतकेँ स्वतंत्र करब अथवा ओहि प्रयासमे अपन प्राणोत्सर्ग करब; हमरालोकनि परतंत्रताकेँ देखबाक लेल जीवन धारण कयने नहि रहब ।"

१९४२ ई. क ९ अगस्तक अहलभोरेमे गांधीजी गिरफ्तार कऽ लेल गेलाह । प्रायः ओही समयमे कांग्रेस कार्य समितिक सभ सदस्यकेँ भारत रक्षा कानूनक अंतर्गत गिरफ्तार कऽ जहल पठा देल गेलनि । ओही दिन बिहारक नेता डॉ. राजेन्द्र प्रसादकेँ हुनक सदाकत आश्रमक निवास स्थानसँ गिरफ्तार कऽ पटनाक तत्कालीन वाँकीपुर जहलमे बन्द कऽ देल गेलनि । ओ दुःखित रहबक कारणे बम्बइ बैसारमे नहि जा सकल छलाह । ओकर

बाद सम्पूर्ण बिहारमे अगस्त क्रांतिक ज्वाला धधकऽ लागल । समस्त देशमे गांधीजीक मंत्र 'करू वा मरू' गूँजि रहल छल ।

बहेड़ा थाना भवन लग १७ अगस्तकेँ नवादा गामक तिरपित नारायण झा तथा जयनारायण झा 'विनीत'क नेतृत्वमे पाँच हजार लोकक भीड़ जमा भेल । थानाक भवन पर राष्ट्रीय झंडा फहराओल गेलैक । बादमे 'विनीत'जीक नेतृत्वमे आगि लगाओल गेलैक तथा बन्दूक छीनल गेलैक । बहेड़ाक रजीष्ट्री ऑफिस एवं डाकघरमे तालाबन्दी करयवला भीड़क नेतृत्व सेहो विनीतेजी कयलनि ।

एहि क्रांतिकेँ दबयबाक लेल बादमे अंगरेजी सरकारक तांडव नृत्य प्रारंभ भेलैक । आंदोलनकारी लोकनिक गाम-गामकेँ गोरा पलटन आगिमे फूँकि देलकैक । सम्पत्तिकेँ लूटि ललकैक तथा क्रांतिमे आगू रहनिहारकेँ संगीन एवं गोलीक शिकार बनौलकैक । इंगलैंडक कोन कथा, सम्पूर्ण गोरा जातिक फौज भारतक आकांक्षा एवं अभिलाषाकेँ दबा देबाकलेल वाउर भऽ गेल छल । बैरेक मे रहनिहार सेनका तँ कथेकोन, जे अंगरेज न्यायाधीश लोकनि सेहो अपन पदक मर्यादाकेँ ताखपर राखि अपना हाथमे बन्दूक उठा लेने छलह । गोरा पलटनक एक हाथमे आगि लगाबयवला लुक्का आ पाउडर रहैत छलैक तथा दोसर हाथमे बन्दूक अथवा पिस्तौल ।

एही क्रूर दमनक क्रममे गोरा सभ 'विनीत'जी क गामक आवाससँ सभ सामान लूटि लेलकनि, खेतक फसिलक जब्ती-कुर्की कऽ घरक महिला (हुनक पत्नी आ भावहु) केँ घरसँ भगा देलकनि । 'विनीत'जी अगस्त क्रांतिक मशालकेँ हाथमे लेने भूमिगत भऽ गेलाह आ पुलिसक आँखिसँ बचबाकलेल अपन देशक सीमा टपि कऽ नेपाल चल गेलाह । ओतऽ अगस्त क्रांतिमे सक्रिय फरारी भारतीय स्वतंत्रता-सेनानी लोकनिक क्रियाकलापमे अत्यधिक वृद्धि भेला संतेँ धड़-पकड़ प्रारभ भऽ गेलैक । तेँ 'विनीत'जी अनुकूल वातावरण नहि देखि भारतीय सीमाक अन्दर आपस भऽ गेलाह । पकड़बाक लेल हुनका माथपर इनाम घोषित छल । फेरारी जीवनमे अपना देशमे पुलिसक आँखिसँ बचब अधिक दिन धरि संभव नहि छल । दरभंगा जिलांतर्गत छोटाइपट्टी गाममे १९४३ ई. क अप्रैल मासमे 'विनीत'जी गिरफ्तार भऽ गेलाह । ओहिमे हुनका डेढ़ वर्षक सजाय भेटलनि ।

सभ मिला कऽ स्वतंत्रता-संग्रामक क्रममे 'विनीत'जीकेँ चारि वर्ष आ चारि मास जहलमे रहऽ पड़लनि । जहलक सजायक संग जे जुर्माना कयल जाइत छलैक, तकरो बदलामे कांग्रेसक घोषित नीतिक अनुसारेँ ओ जहलमे बन्द रहैत छलाह । अगस्त क्रांतिक समयमे विनीतजीक अनुज एकनारायण झा तथा परिवारक दुनू महिला सेहो फेरारी जीवन बितबैत अपना केँ गिरफ्तार हेवासँ बचौलनि ।

सफल विधायक

राष्ट्रीय एवं सामाजिक सेवाक भूमिकामे जयनारायण झा 'विनीत'क चौदह वर्षक बिहार विधान सभाक विधायक रूपमे कार्यक उल्लेख सेहो आवश्यक अछि । स्वतंत्रता

प्राप्तिक पूर्व बेलामे भारतमे अंतरिम सरकारक स्थापना पं. नेहरूक अध्यक्षतामे १९४६ ई. मे भेलैक। प्रांत सबहिमे सेहो एहि तरहक सरकार एवं अंतरिम विधान-सभाक गठन भेलैक। एहि क्रममे विनीतजीकेँ १९४६ ई. मे बिहार विधान सभाक सदस्य बनबाक चाहैत छलनि। मुदा हुनका एहि अवसरसँ वंचित कऽ कांग्रेस दोसर कांग्रसी विन्देश्वरी सिंहकेँ ई अवसर प्रदान कैलक। मुदा दू बरखक भीतरे ओ व्यक्ति स्वर्गवासी भऽ गेलाह। तखन विनीतजी ओही स्थानपर विहार विधान सभाक सदस्य १९४८ ई. मे निर्विरोध चुनल गेलाह। पुनः १९५२ सँ १९६२ ई. धरि दू खेप बिहार विधान सभाक सदस्य निर्वाचित भेलाह आ एहि तरहेँ १४ वर्ष धरि निरंतर एक सम्मानित एवं लोकप्रिय विधायकक रूपमे जन सेवामे लागल रहलाह।

विनीतजी एक कर्मठ, सक्रिय, जनताक आकांक्षाक प्रति सचेत, अपना क्षेत्रक साधारण लोकसँ जुटल तथा विनयशील विधायकक रूपमे चर्चित रहलाह। 'विनीत'जी विहारक दुनू नेता डॉ. श्रीकृष्ण सिंह तथा डॉ. अनुग्रह नारायण सिंहक सर्वदा विश्वास-भाजन बनल रहलाह।

प्रारंभिहसँ स्वतंत्रता-आंदोलनमे सक्रिय भाग लेवाक कारणे अंगरेज सरकारक दमनात्मक नीतिसँ प्रभावित 'विनीत'जीक घरे उजरि गेलनि। हिनक छोट भाइ, पत्नी आ भावहुकेँ गाम-घर छोड़ि भूमिगत भऽ फेरारीक जीवन व्यतीत करऽ पड़लनि। गोरा पलटन कतोक बेर घरकेँ लूटि लेलकनि तथा चल-अचल सम्पत्तिकेँ नष्ट कऽ देलकनि। एखन हिनका परिवारमे मात्र हिनक भावहु रामदुलारी देवी अपन वृद्धावस्था बिता रहलीह अछि। परिवारमे एकोगोट संतानक जन्म नहि हेबाक कारणे परिवारमे ओ एकसर छथिन।

रचनात्मक कार्य

स्वतंत्रता आंदोलनमे गांधीजी रचनात्मक कार्यकेँ राजनीतिक संघर्षसँ कनियो कम महत्त्वपूर्ण नहि मानैत छलाह। सत्याग्रह स्थगित रहबाक अवधिमे रचनात्मक कार्यमे तीव्रता आबि जाइत छलैक। अंगरेजकेँ कमजोर करबाक लेल ई आवश्यक छल जे देशमे जे आवश्यक वस्तु इंगलैंड अथवा दुनियाक दोसर देशसँ अबैत अछि, ओकर निर्माण यदि देशमे कयल जायत तँ ओहिसँ भारतवासीक स्वावलंबन बढ़त तथा ओहिसँ देशकेँ आर्थिक लाभ हेतैक। रचनात्मक कार्यक संग सामाजिक सुधारकार्य सेहो आवश्यक छल। सामाजिक तथा आर्थिक पुनरचनाक विना राजनीतिक स्वंत्रतासँ अधिक लाभ नहि भऽ सकैछ। तेँ जखन-जखन राजनीतिक आंदोलन आ त्याग-बलिदानसँ राष्ट्र थाकि जाइत छल, महात्मागांधी बीच-बीचमे राष्ट्रकेँ रचनात्मक एवं सुधारवादक कार्य दिस मोड़ि दैत छलाह। एहिसँ एक पैघ लाभ ईहो होइत छलैक जे दू आंदोलनक अंतरालमे राष्ट्रमे निष्क्रियता व्याप्त नहि होइत छलैक। ओहिमे हरिजन-उद्धार, महिला-जागरण, सफाइ, शिक्षा, विदेशी वस्तुक

वहिष्कार तथा खादी एवं ग्रामोद्योगक वस्तुक उत्पादन, बिक्री, प्रचार ओ प्रसारक कार्य मुख्य छल। 'विनीत'जी एहि सभ तरहक कार्यमे पूर्ण रूपेण सक्रिय रहैत छलाह। ई सक्रियता आ रचनात्मक कार्यमे संलग्नताक फल भेलैक जे सम्पूर्ण बहेड़ा थानः (जाहिमे एखनुक पाँच गोट थाना समाहित छल) तथा नवादा गाममे खादी एवं ग्रोमोद्योगी वस्तुक उत्पत्ति ओ बिक्रीक एक मानदंड़ स्थापित भेल। अखिल भारतीय खादी कमीशन जतऽ दोसर क्षेत्रमे जिला स्तर पर खादी आ ग्रोमोद्योगक विकेन्द्रीकरण कयलक, ततऽ बहेड़ामे खादी-ग्रामोद्योगक विकेन्द्रीकरण प्रखंड स्तर पर भेलैक। एहि लेल तत्कालीन बिहार खादी-ग्रामोद्योगसंघक नियामक मंडलक सदस्य लोकनायक जयप्रकाश नारायण स्वयं अनुशंसा कयने छलथिन। एक बेर जखन देश भरिमे एक आदर्श विशुद्ध खादीक उत्पत्ति-केन्द्र ओ भंडारक निरीक्षण करबाक इच्छा तत्कालीन खादी-कमीशनक अध्यक्ष ढेबर भाइकेँ भेलनि तँ हुनका 'विनीत'जीक गामक नवादा-खादी-भंडारकेँ देखबाक लेल कहल गेलनि। मुदा कोनो कारणवश ढेबर भाइ एहि निर्धारित कार्यक्रमकेँ पूरा नहि कऽ सकलाह। ई एहि वातक प्रमाण थिक जे नवादा-खादी-उत्पादन-केन्द्र आ'भंडार सम्पूर्ण देशमे एक आदर्श संस्था छल, जकरा बनेबामे 'विनीत'जीक सक्रिय भूमिका सर्वोपरि छलनि।

नवादा गाममे तीन गोट हरिजन-कोलनी, गांधी-स्मारक-पुस्तकालय तथा जयनारायण झा 'विनीत' उच्च विद्यालय हिनक रचनात्मक कार्यमे भूमिकाक एक ठोस प्रमाण उपस्थित करैत अछि। ओना वर्तमान दरभंगा तथा समस्तीपुर जिलाक क्षेत्रमे हिनक रचनात्मक एवं समाजसुधार सम्बन्धी कार्य अनेक ठाम पसरल अछि।

साहित्य-सृजन

राष्ट्रसेवा आ' सामाजिक सुधारक क्षेत्रमे 'विनीत'जीक भूमिका बहुत उल्लेखनीय रहलनि अछि, मुदा ओ प्रधानतया एक साहित्यकार छलाह आओर अपन जीवनक अंतिम समय धरि हिन्दी एवं मैथिलीमे साहित्य-रचनामे सक्रिय रहलाह। बादक समयमे 'विनीत'जी मैथिली कविता ओ निवंध लिखबामे अधिक समय लगबैत छला। मैथिलीक कोनो पत्र-पत्रिका कतहुसँ प्रकाशित किएक ने होइक, ओहिमे हिनक रचना रहब आवश्यके जकाँ छलैक।

'विनीत'जी ओना अनवरत रूपसँ छात्रावस्थेसँ साहितय-साधनामे संलग्न रहलाह। ओ प्राकृतिक सौंदर्यक स्नेही छलाह एवं बहुत भावुक छलाह। कोनो कवि आ साहित्यकारक लेल ई दूगोट वस्तुक अत्यंत आवश्यकता होइत छैक। आरंभमे 'विनीत'जी हिन्दीमे लिखबाक लेल चर्चित भेलाह। एहि शताब्दीक द्वितीय दशकक अंत तथा तृतीय दशकक बीचमे विनीतजीकेँ हिन्दीक कविता लिखबाक लेल रामवृक्ष बेनीपुरी, मोहनलाल महतो 'वियोगी', जर्नादन प्रसाद झा 'द्विज', रामलोचन शर्मा 'कंटक', भुवनेश्वर सिंह' 'भुवन' तथा प्रफुल्लचन्द्र ओझा 'मुक्त'क समकक्ष बिहारक हिन्दीक नवतुरिया कविमे मानल जाइत छलनि। ठाकुर मंगल प्रसाद सिंह द्वारा सम्पादित ' बिहार के नवयुवक हृदय' नामक हिन्दी कविता संग्रहक ग्रन्थमे 'विनीत'जीक संक्षिप्त जीवन-कथाक संग हुनक 'दूत-कृष्ण', हिन्दी कविता संकलित छनि। ओहि समयमे हिनक कविता प्राकृतिक सुषमा, देश प्रेम आ' प्राचीन भारतक गौरव-गानसँ भरल रहैत छलनि।

पं. जयनारायण झाक हिन्दी कविता जाहि प्रमुख पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित होइत छलनि ताहिमे बिहारसँ प्रकाशित होमऽवला 'महावीर', 'नवशक्ति', 'योगी', 'पुकार', 'राष्ट्रवाणी', 'आर्यावर्त्त', 'किसान', 'किशोर', 'बालक' आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। बिहारसँ बाहर जाहि हिन्दी पत्र-पत्रिकामे हिनक रचना छपैत छलनि ताहिमे 'प्रताप', 'मतवाला' 'हिन्दूपंच', स्वतंत्र', 'विश्वमित्र', 'माधुरी' 'सुधा' आ 'चाँद' प्रमुख छल।

'विनीत'जी एक सफल कवि हेबाक अतिरिक्त एक सफल एवं सिद्धहस्त गद्य लेखक

सेहो छलाह । हिनक राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विषय पर लिखल असंख्य हिन्दी निबंध विभिन्न दैनिक, साप्ताहिक ओ मासिक पत्र-पत्रिकामे छपैत छलनि । ओहि गंभीर निबंध सबहिक संकलन-प्रकाशनसँ 'विनीत'जीक राजनीतिक ओ सामाजिक विषय पर विचार एवं सिद्धांतकेँ जनबाक हमरा लोकनिकेँ अवसर भेटि सकैत छल ।

'विनीत'जीक हिन्दी काव्य-संग्रहमे 'कुंज' (१९२७ ई.), 'माला' (१९२८) ई.) एवं 'मानव' (१९२८ ई.) प्रकाशित छनि । 'मेघनाद वध' 'दूत श्रीकृष्ण' तथा 'मरीचि' अप्रकाशित छनि । अप्रकाशित हिन्दी कविता संग्रहमे 'वीरविभूति' 'शूर संदेश' तथा 'विप्लववादी'क पांडुलिपि कांग्रेसकेँ गैर कानूनी घोषित रहबाक समयमे पुलिस द्वारा जप्त भऽ गेलनि आ' ओ वापस नहि भेलनि । एहि तरहेँ एक राष्ट्रभक्त एवं स्वतंत्रता-सेनानी कवि द्वारा रचित राष्ट्रीय भावनासँ ओतप्रोत कविता सबहिक रसास्वादन करबासँ राष्ट्र सदाक लेल वंचित भऽ गेल ।

'दुर्दैव दमन' नामक एक हिन्दी नाटक 'विनीत'जी अपन छात्रावस्थेमे लिखने छलाह, तकर पाडंडुलिपि अप्राप्य अछि । हुनक लिखल 'सुकन्या' नामक आख्यायिकाक मात्र किछुए अंश सम्प्रति उपलब्ध अछि । हिनक फेरारी जीवनमे तथा जहलमे रहबाक समयमे ई रचना सभ पूर्ण रूपेण अथवा आंशिक रूपसँ नष्ट भऽ गेलनि, किंवा हेराय गेलनि से कहब कठिन अछि । ओहि सभ रचनाकेँ 'विनीत'जी पुनः लिखि नहि सकलाह, ने पूरा कऽ सकलाह । मृत्युसँ किछु समय पूर्व 'विनीत'जी अपन छिट-फुट हिन्दी-कविताक एक संकलन तैयार कऽ रहल छलाह, जकरा प्रकाशित करबाक हुनक योजना छलनि । मुदा अर्थाभाव एवं उपयुक्त प्रकाशकक अभावक करणे ओ योजना सफल नहि भेलनि । विनीतजीक रचना सबहिक कतोक रत्न प्रकाशकिरण प्राप्त करबाक अवसरसँ वंचित भेल पड़ल अछि । हुनक मैथिली कविताक दोसर संकलित पोथी 'विनीत-भारती'क विमोचन करबाक अवसर पर हिन्दी तथा मैथिलीक प्रख्यात कवि बाबा नागार्जुन बजलाह जे 'विनीत'जीक हिन्दी कविताक एक संग्रह अवश्य प्रकाशित हेबाक चाही । ई अवसर 'विनीत'जीक मृत्युक बादक छलैक ।

एतऽ हमरा जयनारायण झा 'विनीत'क मैथिली साहित्य-सृजन पर मुख्य रूपसँ विचार करबाक अछि । हिनक दू गोट मौथिलीक कविता-संग्रह प्रकाशित भेलनि अछि; 'पुष्करिणी' आ' 'विनीत-भारती' । प्रथम संग्रह पंचायत प्रेस लहेरियासराय (दरभंगा) सँ १९६९ ई. मे प्रकाशित भेल आ' दोसर बीस वर्षक बाद 'विनीत प्रकाशन', नवादा (दरभंगा) सँ १९८९ ई. मे । मैथिलीमे 'सुमन-संचय' नामक हिनक एक गोट काव्य संग्रहक पांडुलिपि 'मैथिली-अकादमी' पटनामे प्रकाशनार्थ कतोक वर्षसँ राखल अछि । आशा बहुत कमे अछि जे ओहि संस्था द्वारा ओकर प्रकाशन कहियो भऽ सकत । ई काव्य-संग्रह राजकन्या सुकन्या एवं महार्षि च्यवनसँ सम्बन्धित अछि ।

'पुष्करिणी'मे लगभग अढ़ाइ सोड़हि कविता संकलित अछि । मैथिलीक प्रख्यात आलोचक प्रो. रमानाथ झा कहैत छथि जे 'पुष्करिणी ई अवश्य अछि जाहिमे नाना प्रकारक कविता-कुसुम प्रस्फुटित भए सौरभ विकीर्ण करैत अछि, एकोटा कविता सौरभ-हीन नहि कहल जा सकैत अछि ।'' ओतहि मैथिलीक महान कवि एवं साहित्यकार आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क कथन छनि जे एकर ''एक-एक पद राग-रस राष्ट्रधर्म-संस्कृतिक सुरभि अथच समाजोत्थानार्थ रूप रमणीयतासँ ओत-प्रोत अछि ।'' ई ''रसमय, कलामय, राष्ट्रिय भावनामय, लोक कल्याणोन्मुखी, सर्वोदयी काव्य-कृति'' थिक ।

प्रो. शैलेन्द्रमोहन झाक मान्यता छनि जे ''स्वान्तः सुखायसँ प्रेरित हिनक काव्य सर्वदा समाजहितसँ अनुप्राणित रहल अछि। इएह कारण थिक जे 'विनीत'जीक काव्यमे 'प्रयोग'क आकर्षण नहि, 'प्रभाव'क अन्तर्दीप्ति अछि । एहिमे केवल समवेदना नहि, सन्देश अछि । उद्‌बोधन, अनुरोध, अनुशासन आदि हिनक काव्यक मूल स्वर छन्हि आ' मातृभूमि ओ मातृभाषा, देश ओ समाज, ऋतु ओ प्रकृति आदि हिनक काव्यक तत्त्वदृष्टि ।''

मैथिली काव्य-धाराक पुरान आ नवीन-युगक बीचमे विनीतजीक प्रादुर्भाव भेलनि । मैथिलीक आधुनिक युगक प्रवर्त्तक चन्दाझाक देहावसानक समयमे 'विनीत'जी शैशवावस्थामे छलाह । प्रो. रमानाथ झा ठीके कहैत छथि जे ''ई ओही युगक कवि थिकाह जहिया मैथिली-कविता पुरान युगकेँ पार कए नवयुगमे आबि गेल छल । परन्तु 'विनीत'जी नवयुगक उपयुक्त विषयहिटाकेँ ग्रहण कएल अछि; रीति हुनक पुराने अछि । तेँ हिनक कवितासँ नव ओ पुरान दुहू रुचिक पाठक रसग्रहण कए सकैत अछि ।''

शब्द आ भाव, भाषा एवं कथ्य दुनूमे हिनक कविता एक अपूर्व सामञ्जस्य उपस्थित करैत अछि । 'विनीत'जी क काव्यक मूल स्रोत हिनक देशभक्ति थिकनि तथा उत्साहकेँ कविताक स्थायी भाव कहल जा सकैत अछि । हिनक कविता नवयुगक हेतु प्रेरणा प्रदान करैत अछि । 'विनीत'जी केँ 'पुष्करिणी'क प्रकाशनमे मैथिलीक दधीचि भोला लाल दासजीक प्रेरणा, प्रो. शैलेन्द्रमोहन झाक अत्यधिक उत्साह तथा प्रो. रमानाथ झा, सुमनजी, एवं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क सहयोग प्राप्त छलनि ।

'पुष्करिणी' मे जे कविता सभ संकलित अछि ओहिमे नवपीढ़ीक लेल संदेश, भारत राष्ट्रक महनीयताक उपासना, जनतंत्र एवं सर्वोदयक अभ्यर्चना, सामाजिक सौमनस्य आ सुधारक कामना, ग्रामराज एवं विशाल राष्ट्रक गान तथा प्राकृतिक सौंदर्य ओ सुषमाक वर्णन प्रमुख अछि ! विनीतजी एक दिस जँ नवपीढ़ीकेँ संदेश दैत छथि तँ दोसर दिस मिथिला एवं मैथिलीक महिमा मंडित एवं मांगलिक धरोहरसँ ओकरा परिचय करबैत छथिन । कतोक वर्ष आजादी एवं गणतंत्रकेँ बीति गेलाक बादो देशक किसान ओ मज़दूरक हालतिमे कोनो परिवर्तन नहि देखि जँ कखनहुँ 'विनीत'जी दुखी भऽ उठैत छथि तँ लगले हुनका दोसर दिस एक नव आशाक किरणक उदय देखि पड़ैत छनि ।

बाबा नागार्जुन पं. जयनारायण झा 'विनीत' केँ मैथिलीक मैथिलीशरण गुप्त मानैत छथि। विनीतजी गुप्तजीक 'भारत-भारती' मे उठाओल गेल स्वरमे स्वर मिला कऽ अपन जागरण कवितामे कहैत छथि;

"की अहाँ पहिने रही, की आइ छी, ई तँ विचारू।
वीर-युगमे छी अहाँ हुंकार सुनु, युग धर्म धारू।
होउ विक्रम व्योम मे ध्रुव, युद्ध दिग्भ्रम मे सम्हारू।
दास्य-सिर सँ अपन जग-गुरु-मुकुट तँ आबहुँ उतारू॥

एहि संकलनक दोसर कविता 'संदेश सुनू' मे कवि नवतुरिया लोकनिकेँ नवयुगक नव संदेश सुनबैत कवि कहैत छथि;–

करू अपन शौर्य-संवाद श्रव्य।
संदेश सुनू नवयुगक नव्य॥

अपन राष्ट्रक विशालता, ओकर गौरव तथा महत्ताक गीत गबैत कवि अघाइत नहि छथि। 'विनीत'जी छात्रावस्थेसँ राष्ट्रीय जागरण आ स्वतंत्रताक संघर्षमे अपना जीवनक सर्वोत्कृष्ट समयकेँ लगौने छलाह। स्वतंत्रताक वलिवेदी पर जे अपन यौवन, शिक्षा, सुख-सम्पत्ति ओ काव्य-प्रतिभाकेँ होम कऽ देने हो, तकरालेल अपन राष्ट्रक गान करव अत्यंत स्वाभाविक होइछ। कवि 'अपन देश विशाल' कवितामे कहैत छथि;–

चन्द्रमा ज्योत्स्नाक जल सँ
धोथि हिमक किरीट
रहथि कारा कन्दरा मे
तम सदैव प्रविष्ट
नित अरुण उदयास्त करसँ
भाल कऽ देथि लाल
अपन देश विशाल

१९६५ ई. क भारत पर पाकिस्तानक आक्रमणसँ कवि अत्यंत विचलित भऽ उठैत छथि। ओ अखंड भारतमे जनमल छलाह, अंगरेजी दासतासँ ओकरा मुक्तिक लेल संग्राममे जूझल छलाह। मुदा स्वतंत्रताक कतोक वर्षक बाद भारतक एक कृत्रिम हिस्सा द्वारा राष्ट्र पर अकारण युद्ध थोपबा पर कवि मर्मांतक पीड़ाक अनुभव करैत छथि। पाकिस्तानकेँ ललकारैत कवि कहैत छथि :–

शूर स्वभावी भारतसँ भिड़ि कयलह भारी भूल
रिपु पहाड़ लय पवि, तऽ शरणागत लय ई अछि फूल
करब नाश निज नीक न, रण-हठ छोड़ह पाकिस्तान
कहियो क्यो न मारतह भारत जँ रहतह अनुकूल

जनता-जनार्दन, ग्रामराज, रामराज, जनतंत्र आदि विषय पर कवि 'विनीत' वारंवार अपन लेखनी चलबैत छथि। जनता जर्नादनक जागरणक आब एक बेर पुनः आवश्यकता छैक। ग्रामराजमे जाहि रामराजक सपना पुनः देखने छलाह से पूरा नहि भेल अछि। भारतक असंख्य स्वतंत्रता-सेनानी आ राष्ट्रसेवी लोकनिक मोहभंग भऽ गेल छनि। जाहि स्वतंत्र भारतक कल्पना विनीतजी सन हजारक हजार नेता ओ कार्यकर्ता कयने छलाह से छिन्न-भिन्न बुझि पड़ैत अछि। 'गाम राज' नामक कवितामे कवि कहैत छथि;–

ध्रुव ई मानू
राम राज कल्पना गेल बनि
केवल लोक कलपना
ग्रामराज हो राम राज
ई अछि सम्प्रति अति दुष्कर
संघ, सभा, भाषण मात्रे पर
ई न करै अछि निर्भर

'जनतंत्रहिकेँ न मेटाबय' नामक कवितामे कवि जनतंत्रक दुर्दशा पर क्षुब्ध भऽ लिखैत छथि;–

जन जागरण क्षुब्ध अछि, ई
प्रलयंकर बनि नहि पावय
भय अछि, क्रुद्ध जागरण ई
जनतंत्रेकेँ न मेटाबय

मुदा कवि देशक विभिन्न प्रकारक दुर्दशापर हतोत्साह नहि होइत छथि। ओ आशावादी छथि तथा सामाजिक क्रांतिक मार्गसँ सभ समस्याक निदान हैत से विश्वास करैत छथि। 'उग्र हो जनता जनार्दन' मे कवि कहैत छथि;–

उग्र हो जनता जनार्दन
चलय क्रांतिक चक्र
व्यक्तिवादी वृत्ति वृत्रासुरक
हो से शक्र
जे विभव परदान होबय
यंत्र युग सँ प्राप्त

कवि मिथिला, मैथिल तथा मैथिलीक पूर्व गौरव प्राप्त करबाक लेल एवं मिथिलाक उज्ज्वल इतिहासक पनरावृत्तिक हेतु उद्यत छथि तथा एहि सम्बन्धमे विद्यापतिक आह्वान करैत छथि। कवि कहैत छथि;–

मिथिला, मैथिल, मैथिलीक कीर्ति
भू भरि पसरल, सेहो दिन छल

विस्मयी विविध गुण गण सँ अछि
इतिहासक पृष्ठ-पृष्ठ उज्ज्वल

पूर्व स्थितिकेँ प्राप्त करबाक लेल कवि शस्त्र एवं शास्त्र दुहूकेँ धारण करब आवश्यक बुझैत छथि। हुनक कथन छनि;–

शस्त्रास्त्र, शास्त्र दुहुमे समान
निष्णात बनक जँ रहत ध्यान
अविलम्बे तँ कऽ लेब प्राप्त
गत गौरव, पूर्वक महा मान

मिथिलाक प्राचीन गरिमाकेँ आपस अनबाक लेल कांवे 'विनीत' कवि-कोकिल विद्यापतिक 'आवाहन' करैत कहैत छथि;

ओइबेर संग शिव केँ अनलहुँ
एहिबेर रुद्रकेँ लाउ संग
मिथिलाक सिंधुमे जे न सुप्त
रहि सकय शौर्य वीर्यक तरंग
मिथिला जग जानित फेर बनय
मैथिल गत गौरव प्राप्त करथि
साहस नहि क्यो कऽ सकय आब
अन्याय करक मैथिलक संग

जेना कि ऊपर कहल अछि, 'विनीत'जी प्राकृतिक सुषमाक अवलोकन एवं ओकर सौंदर्यक उपासना करबामे सेहो अपन अद्‌भुत क्षमता देखौलनि अछि। सघन श्यामल घनसँ घेरल आकाशक घटाटोप, वर्षा आ सन-सन बहैत पवन कविकेँ अत्यन्त आकर्षित करैत छनि। एहि संकलनमे एहि सम्बन्धमे हिनक चारिगोट कविता संकलित अछि, जेना 'लगनमे बन गगन पवन', 'घन सघन गगन सगरे व्यापल', 'घन घटाटोप भऽ नभ झाँपल' तथा 'भऽ रहल अछि 'वारिवर्षण'। कवि कहैत छथि;–

अति दानी अक्षय धनपति सन
हीरक मणि मोती मुक्ताकण
निर्मल जल आँजुर आँजुर भरि
बिनु मङनहि पुनः पुनः क्षण क्षण
घन उमड़ि घुमड़ि अछि उझलि रहल
घन सघन गगन सगरे व्यापल

एहिमे वर्षा-वर्णन ककरो मोनकेँ मोहि लेत। शब्दक चयन, अर्थक स्पष्टता, शब्दालंकारक पतियानीसँ युक्त ई पाँती सभ मैथिली साहित्यक सारस्वत निधि थिक। एही

तरहेँ दोसर कवितामे 'विनीत'जी 'नभक घन घटाटोप' पर कहैत छथि;

घन घटाटोप भऽ नभ झाँपल
उज्ज्वला प्रभा भेली मलीन
भऽ गेल विमल नभ तन कज्जल
घन घटाटोप भऽ नभ झाँपल

दोसर ठाम वर्षा-वर्णनमे कविक उक्ति अत्यंत मनोहर अछि;

धौत इरियर पहिरि पल्लव
पट, प्रकृति प्रियदर्शिनी बनि
ताल केकी कलरवक दऽ
दादुरक रव साधि स्वर ध्वनि
कऽ रहल छथि सलिल स्वर
झरझर सम्हारि मलार गायन
भऽ रहल अछि वारि वर्षण

आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'विनीतजी'क सम्बन्धमे कहल शब्दक आधार पर कहि सकैत छी जे ''राष्ट्रीय सेवा-व्रती'' आ राजनीतिक सैकत पथक अथक पाथिक रहितहुँ'', ओ ''अन्तरमे निरन्तर साहित्यिक रसवन्ती जोगबैत आयल छथि ।''

'विनीत'जीक दोसर मैथिलीक कविता संग्रह 'विनीत-भारती'मे शतावधि कविता संग्रहित भेल अछि । कवि स्वयं एहि पोथीक 'लेखकीय'मे कहैत छथि जे ''बीस वर्षक बाद आइ हमर ई दोसर कविता-संग्रह प्रकाशित भऽ रहल अछि । हमर जीवनक अधिक समय समाज-सेवामे व्यतीत भेल । साहित्यसेवामे बड़ थोड़ समय हम लगा सकलहुँ ।'' विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित असंख्य मैथिली कविताक कतरनक कतोक फाइलसँ ताकि एहि संकलनक पांडुलिपि तैयार करबाक कार्य एहि पंक्तिक लेखक, डॉ. भीमनाथ झाक सहयोग सँ कयने छलाह । ई संग्रह 'विनीत'जी क जीवनकालमे प्रकाशित भऽ गेल से सभसँ सुखद बात छल ।

श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' एहि पोथीक प्रकाशनक अवसर पर अपन 'सम्मति' मे कहलनि अछि जे– ''अग्रतः सकलं शास्त्रं पृष्ठतः सशरं धनुः' एहि वाक्यकेँ चरितार्थ कयनिहार मनीषी, 'विद्याददाति विनयम्' एहि वाक्यक मूर्तिमान व्यक्तित्व पं श्री जयनारायण झा 'विनीत' प्रणीत 'पुष्करिणी' मे अवगाहन कयनिहार सुधीवृन्द हिनक सद्यः प्रकाशित दोसर काव्य-संकलन 'विनीत-भारती'क अनुशीलन करताह तँ निश्चित रूपेँ कविक हृदयमे देशक स्वर्णिम अतीतक प्रति आत्मगौरव, दुर्व्यवस्थाजन्य विकृत होइत वर्तमानक प्रति संताप आ आक्रोश तथा आशामय भविष्यक प्रति विश्वासक दर्शन कऽ पओताह ।''

आगाँ एहि क्रममे 'अमर'जीक ई कथन पूर्णरूपेण समीचीन छनि जे ''आशा करैत छी जे प्रस्तुत संकलन मातृभाषाक श्रीवृद्धि करबामे सहायक होयत तथा समाज एहिमे

संचित सूक्ति ओ ज्ञानसँ अपनाकेँ लाभान्वित करत ।''

एहि संकलनक अंतिम कविता 'परिचय' मे कवि अपन परिचय एना दैत छथि;–

वंश हमर बड़ पैघ, ख्यात अछि–
पगुलवार बढ़ियाम
मुनि शांडिल्यक गोत्र हमर थिक
ख्यात जनिक अछि नाम

प्रस्तुत संकलनक एगारह गोट कवितामे भारतक प्राचीन गौरव एवं महत्ताक स्मरण कराओल गेल अछि । देशवासी पाठक लोकनिकेँ अपन महान देशक नागरिक होयबाक बोध कराओल गेल अछि । भारतवासीकेँ अपन राष्ट्रक उत्थान लेल त्याग एवं वलिदान करबाक लेल प्रेरित कयल गेल अछि । भारतवर्ष विश्वमंच पर चमकय ताहि प्रयासमे अपन सर्वस्व लुटा देबाक भावनाकेँ सेहो कवि जगौलनि अछि;–

भारत विश्वमंचपर चमकत
सहअस्तित्वक अधिवक्ता रहि
बली बनाव' लै सहयोगक पथ
पकड़त, पकड़त शोषण-पथ नहि
हम प्रकाश छी अंधकारमे
स्नेह मगन हम बरबाती छी
हम महान देशक वासी छी

भारतवर्षक सम्बन्धमे कविक अभिलाषा छनि जे;–

भारत हो एहेन कि चरण चिह्न पर
चलि जग-जीवन बनय विमल
बसुधा पर विलसऽ लागय पुनि
भू भरिक भव्य भऽ तीर्थस्थल

भारत राष्ट्रक सम्बन्धमे अर्भ्यथना ओ आवाहन कयलाक उपरान्त कविकेँ अपन मातृभूमि मिथिलाक स्मरण होइत छनि । एहि संग्रहमे तीन गोट कविता मिथिलापर संकलित अछि, जेना,– 'मिथिला थिक धर्मधाम', 'आवहु करू उद्धार' आ' ''चाही हमरा तँ से मिथिला' ।

कवि केँ केहेन मिथिलाक अभिलाषा छनि से स्पष्ट करैत छहैत छथि,–

चाही मिथिला, जे याज्ञवल्क्य गौतम मुनि-महिमा मंडित छल ।
चाही मिथिला से, जतऽ आबि सुकदेवजीक भ्रम छल-छूटल ।
चाही मिथिला, उद्यान जकर मन मोहि लेल भगवानहूक ।
जकरा दुहिताले' पुरुषोत्तम रामो गुरु शिवक धनुष तोड़ल ।

मिथिला शांति-समर्पित रहल अछि, मुदा अवसर अयलापर ओ क्रांतिक पथसँ सेहो

अपन मुँह नहि मोड़लक अछि । कविक शब्दमे–

हम मैथिल छी, मैथिली हमर भाषा, हम शान्ति समर्पित छी ।
पर पाछू छी पुरुषार्थमे न, अवसर पर क्रांति समर्पित छी ।
थिक हमर शांति नहि शवक शान्ति, ई शान्ति न सहन करत अनुचित ।
अन्याय असुर संग्राम लेल ई शान्ति अवश्य बनत चण्डी ।

जनताक स्वराज, पन्द्रह अगस्त, गणतंत्र दिवस, सतशासन, समर्थ शासन, जनतंत्र आदि विषय पर कविक चिंतन आ गान यत्र-यत्र संकलनमे भेटैत अछि । कवि विश्व-शासनक स्वप्न सेहो देखैत छथि । संसारमे व्याप्त संताप, आक्रोश एवं असुविधाक मात्र इएह समाधान अछि जे विश्व संघ-शासनक संघटन कयल जाय । महात्मा गांधी सेहो मानव मात्रक कल्याण चाहैत छलाह । विनीतजी अपन 'होअय एहि पर चिंतन' शीर्षक कवितामे कहैत छथि;–

भौगोलिक सीमामे वान्हल अछि न आइ विज्ञान
आइ बनि रहल विश्वस्तर पर बहुतो सब विधान
विश्व संघ-शासनमे जँ संसार समंस्त रहत तऽ
संसारक सब सुख सुविधा सब जन लै रहत समान

आजुक जनतांत्रिक शासन पर कटाक्ष करैत ओकरा प्राचीन भारतक राजतंत्रसँ तुलना करैत कवि कहैत छथि;–

जनतांत्रिक शासन अछि, तइयो
जनसाधारण बहुत दुखी अछि
प्रगतिक ढोल बहुत पिटलार पर
देखी, किछुए लोक सुखी अछि
राजतंत्र रामक छल, तइयो
जन-जीवन सानन्द सुखी छल,
आइ लोकतांत्रिक शासन, तँ
लोकक पेट पीठ मे सटकल

विनीतजी जाहि प्रकारक स्वराज चाहैत छलाह तकर शासन कोन तरहक हेबाक चाहैत छल,–ताहि विषयमे हुनक विचार फड़िछायल एवं स्वच्छ छनि–

सोखि सलिल, निर्मल कऽ बाँटय पाणिपयोदँ दिनकर
तिमिर हृदय आलोक अमृत वाँटय निरपेक्ष सुधाधर
लोक-लाभ-लब्धक बाँटब हो
रवि-राशि सन निर्दोष

स्वराज भेलापर जे लाभ आर्थिक, सामाजिक एवं शासनक हिस्साक सम्बन्धमे

भेटलैक, तकर वितरण न्याययुक्त नहि भऽ सकलैक। थोड़ गोटे जे सामर्थ्यवान आ धूर्त छल से ओ लपकि कऽ अंगीकृत कऽ लेलक। साधारण जनता ओहिसँ पूर्ण तरहेँ वंचित रहि गेल। जाहि प्रकारक रामराज्यक कल्पना बापू करैत छलाह से कतहु हेराय गेल। कविक कथ्य छनि;–

'असन, वसन, आवास, व्यवस्था काजक'
जे शासन कऽ सकत,–कहब तकरा भल
बनत कुसुम आकाश स्वराष्ट्रक आशा
जहि शासनमे, तकर कोन परिभाषा ?

पन्द्रह अगस्त केँ स्मरण करैत कवि कहैत छथि;–

बीतल न समय कम,–देश जखन स्वाधीन भेल
स्वाधीनताक सुख, श्री न भेल जनताक लेल
औखन धरि लाखक लाख पेट अछि पीठ सटल
सुखश्री सुरसरि पूजीपति पर्वत घेरि देल

जाहि पन्द्रह अगस्त अथवा आजाद भारतक प्राप्तिक लेल कवि जीवन पर्यन्त संघर्ष करैत रहलाह, से जखन आयल तँ ओहिसँ निराशा आ आक्रोशे टा भेटल। अंगरेजी शासन भारतक जमींदार तथा पूजीपतिक सहयोग पर टिकल छल। आ' स्वतंत्र भारतक शासनकेँ सेहो पूजीपतिए अपना खुट्टामे खुटेसि लेलक अछि।

मुदा कवि देशवासीकेँ ललकारैत कहैत छथि जे वर्तमानक दुरवस्थाकेँ चुपचाप सहैत रही आ ओकर प्रतिकारक कोनो उपाय नहि करी, ई मनुष्यक लेल अक्षम्य अपराध थिक। विनीतजी वर्तमानसँ असंतुष्ट छथि तथा ओकरामे सुधार करबाक लेल सक्रिय भऽ पुरुषार्थकेँ जगाबऽ चाहैत छथि। 'उचित थिक' कवितामे ओ अपन विचारक अभिव्यक्ति करैत कहैत छथि;–

वर्तमान वेदनाकेँ मौन बनि सहिते रहब
किन्तु किछु प्रतिकार करबाकेर साहस नहि करब
मानसिक दौर्बल्य थिक, अक्षम्य ई अपराध थिक
दुर्वलात्मा लेल होयत दुखद दृष्टान्ते धरब

एहि संग्रहमे महात्मा गांधीसँ सम्बद्ध दू गोट कविता अछि 'अनिवार्य भेल' आ 'हे गान्धी'। एहि दुनू कविताक माध्यमसँ कवि गांधीक आवाहन ओ स्मरण करैत छथि;–

भऽ गेल कुचक्री शासन सँ खंडित स्वेदश
ओहि सभक कुफल अछि भोगि रहल भारत विशेष
पुनि टुकड़ी-टुकड़ी होअओ देश, होइछ प्रयास
भऽ रहल राष्ट्रकेँ एहिसँ बड़ आन्तरिक क्लेश

पुनः दोसर ठाम कवि ई कहवाक लेल बाध्य छथि;–
किन्तु रामराजक सपना साकार कहाँ अछि भेल
आनल अहाँ स्वराज, राम राजक आगमन लेल
रामराज आनक अभिलाषा, शीघ्र होमए साकार
पुनरागमन अहाँक आब तेहि लै आवश्यक भेल

रामराज्यक स्थापना लेल कवि गांधीक पुनरागमनक अभिलाषा करैत छथि। मुदा गांधी सन महापुरुषक पुनरागमन हजार-हजार वर्षक बादे संभव होइत छैक। राम, कृष्ण ओ गांधीक अवतारक अंतराल कतेक पैघ-पैघ रहल अछि। तेँ गांधीजीक सिद्धांत पर चलनिहार लोकनिक आब ई कर्तव्य छनि जे हुनक कल्पना एवं संकल्पकेँ साकार करबामे कोनो कोताहिल नहि करथि।

'विनीत'जी अपन अनेक पद खंड सबहिक बीच-बीचमे छोट-छोट दृष्टांतक माध्यमसँ सूक्ति गढ़ैत आदर्श जीवनक मंत्र दैत छथि,– दूध बनु नहि पानि; दुर्बल भालरि सन बन नहि मन; शूलसन नहि, सुमन सन बन; जाइ बनि अपने कमल सन, आदि।

कवि एक सुधारवादी समाजसेवी रहलाह। ओ समाजक रूढ़िवादी विचार एवं क्रिया-कलापकेँ पूर्ण रूपेण हटबऽ चाहैत छथि। जीर्णशीर्ण रीति-रेवाजसँ समाजकेँ मुक्ति भेटब अत्यंत आवश्यक छैक। एहि सम्बन्धमे कवि कहैत छथि;–

रीति-रेवाजक जीर्णशीर्ण सभ पात
झट झाड़ि खसओ समाजक तरुसँ
चलय चेतना शिशिर बसात

एकर अतिरिक्त प्रस्तुत संग्रहमे कोमल गीत एवं ऋतु-वर्णनमे प्राकृतिक सौंदर्यक दर्शन होइछ। डॉ. भीमनाथ झाक शब्दमे "उपदेश, उद्‌बोधन, चेतौनी, दार्शनिकता– 'विनीत'-काव्यक प्रमुख स्वर थिक।"

कवि आशावादी तँ छथिहे, संगहि स्वर्णिम भविष्यक प्रति आश्वस्त सेहो छथि। संकलनक अंतिम गोट सातेक कवितामे कवि अपन जीवनक मर्मस्पर्शी कथाक स्पष्ट संकेत कयलनि अछि। विनीतजीकेँ दुइ भाइक बीच एको गोट संतान नहि छलनि। ओ अभाव हुनका खटकैत छनि। मुदा कवि आ लेखकक साहित्य एवं कीर्ति अटल रहैत छैक तथा कोनो संतानसँ अधिक चिरस्थायी रहैत छैक। विनीतजीक जे समाज-सेवा छनि, त्याग छनि एवं साहित्य-रचना छनि से हुनका कतोक युग धरि जीवित रखतनि। कीर्त्तिर्यस्य स जीवति।

कवि एक ठाम कहैत छथि;–
सांसारिक संताप तापसँ पीड़ित जे जन
हमर शब्द हो हुनका सबलै शीतल शशिसन

कविक अभिलाषा ई उचिते छनि जे हुनक शब्द संसारक संताप एवं पीड़ासँ ग्रस्त-

त्रस्त लोककेँ मुक्ति दैक आ चन्द्रमाक ज्योत्स्नाक शीतलता प्रदान करैक ।

'विनीत'जीक जतेक कविता सभ विभिन्न मैथिली पत्र-पत्रिका सबहिमे प्रकाशित छनि, ओकर बहुत न्यून अंशकेँ हिनक उपर्युक्त दू गोट संग्रहमे संकलित कयल जा सकल अछि । ओहि सभ कविताकेँ यदि पोथीक रूपमे प्रकाशित कयल जाय तँ अनेक संग्रह पाठकक समक्ष आबि सकैत अछि तथा ओ सभ मैथिली काव्य-साहित्यक श्रीवृद्धि करबामे अनुपम योगदान कऽ सकत । 'विनीत'जी निःसंतान छलाह आ आब हुनक धर्मपत्नी गुलाबदेवी सेहो स्वर्गवासी भऽ गेल छथिन । तेँ हुनक रचित काव्यरत्न सभकेँ प्रकाशमे अनबाक कार्य हुनक ट्रस्ट करतनि, से आशा करैत छी ।

'विनीत'जीक साहित्य-सृजनक सम्बन्धमे हम डॉ. भीमनाथ झाक शब्दमे अपन बात समाप्त करऽ चाहैत छी जे ''कविवर 'विनीत'जी जाहि काव्यरत्नकेँ हमरालोकनिक लेल संचित कऽ गेल छथि ओ लगले मलिन भेनिहारि नहि थिक, ओकर चमक उड़ि गेनिहार नहि अछि । ओ तँ युग-युग धरि चमकैत रहत आ अपन कविकेँ जीवित रखने रहत ।''

किछु बीछल कविता

१. आवश्यक अछि

शोषक-शासनमुक्त समाजक रचना लक्ष्य बनाबी
ताहि दिशि प्रगतिशील जन-जन छी, से जौं दृश्य देखावी
अमरलोकसँ अधिके अवनि आकर्षक होयत त'
वनत सौम्य शोभा सृष्टिक त' मानव-कृत भव भावी

सर्वश्रेष्ठ सृष्टिक रचना जनगण की क' न सकै छथि !
जँ उदात्त आदर्श पालनक दृढ़ निश्चय ल' लै छथि
परिवर्तन पृथ्वी पर आनब हस्तामलक हुनक थिक
जँ प्रयास शृंखलाबद्ध सामूहिक मे न थकै छथि

शक्ति-सिन्धु आत्मा असीम अछि, ई जँ जन-जन जानथि
करब शान्ति-सुखमय जन-जीवन ई जँ जन-जन ठानथि
त' देरी लागत नहि पावन परिवर्त्तन आनै मे
आवश्यक अछि शीघ्र अनघ जीवन जन-जन अपनावथि

मैथिली कविता, अप्रैल १९६८

२. पतन रोग मुक्त बनत

सत्यक अछि मार्ग सोझ लेकिन अति दुर्गम अछि
आवश्यक सत्य लेल साहस धृति दुर्दम अछि
डेग डेग पर डिगैक अवसर नहि आवय कम
अग्नि परीक्षौक समय आबय जे निर्मम अछि

सद्विवेक जागरुक सत्य पथक सम्बल थिक
अचलाचल व्रती वृत्ति रहब दंड दृढ़ बल थिक
आवश्यक भेलापर धन जन तन प्राणो जे
कऽ सकय निछावर से सत्य सरक उत्पल थिक

कहियो रहथि सत्यव्रती हरिश्चन्द्र दशरथ सन
राज पाट प्राण त्यागि राखल निज सत्यक प्रण
सुयशक तन पाबि सत्य बलें अमर भेलथि ओ
हुनका नहि मारि सकल पंच तत्त्व-छीनि मरण

सत्य श्रेष्ठ सृष्टि शक्ति सत्य शक्ति अछि अजेय
प्राणो दय देव सत्य लेल रहत जकर ध्येय
मरियो कए अमर रहत भवक भव्य भूषण भए
सच्चरित्र तकर रहत कालजयी दिव्य गेय

सत्यक परीक्षा केर पावक पर चढ़ि चढ़ि कए
जीवन जल विमल बनय तपि कए जरि जरि कए
सोना थिक सत्यव्रती पावक परीक्षा पाबि
बेरि बेरि चामीकर चमकि उठय बढ़ि बढ़ि कए

सत्य तरणि तेज सकत सहि न तमोगुणक तिमिर
रहत की अन्हार ततय, जतय उगल रहत मिहिर
जनगण मन बनय सत्य सूर्यक सदुपासक जँ
पतन रोग मुक्त बनत समाज देह अचिर

मैथिली कविता, अप्रैल १९६९

३. जय जनम-भूमि सय सय प्रणाम

जय जनम भूमि सय सय प्रणाम
जानकी जगत-जननीक धाम
कोशी, कमला, सरि बागमती
लक्ष्मणा, गंडकी बागमती
सलिला समूह छथि सेवि रहल
कलकल स्वर सँ सुनवति विनती

सेवा करैत दिन राति रहथि
सुमिरण करैत से अहँक नाम
जय जनम भूमि सय सय प्रणाम

पद पद पर प्रकृति छटा छहरय
ल' सुरभि समीरण बहल करय
वन उपवन सब फल फूल भरल
फल-फूलक होइत रहय संचय
जय-जय कारक बहु विहग कुलक
कलरवक शंख रहि रहि बाजय
सुषमा सिङार कृत प्रकृति अहँक
ककरा नहि लागय अति ललाम

जय जनम भूमि सय सय प्रणाम
बाड़ी-बाड़ी मे साग लगल
लत्ती सब जत' तत' पसरल
दाड़िम नेबो सव फुलति फरति
केराक बीट फल-भार भुकल
शोभित फल-पत्र ललाम आम
फुलवाड़ी विविध प्रसून सजल
डिहबारक आगुक सांध्य दीप
मंदिरक शंख-घंटा बाजल
मैथिलक निवास-स्थल जनबय
लोकक स्वरूप नयनाभिराम
जय जनम भूमि सय सय प्रणाम

घर-आंगन सब नीपल-पोतल
तहि मे तुलसी-चौरा ढेउरल
चौरा सभ मे तुलसी रोपल
पोसल-पालल द' अच्छिजल
महँ मा हँ करैत चानन-चोआ
पूजा अर्चामे सरर पड़ल
सादा पहिरब ओढ़ब लोकक

हँसमुख मृदु वचन-विनोद भरल
चानन सह सिनुरक ठोप कहय
मिथिला थिक महि पर देव धाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

मुनि याज्ञवल्क्य गौतम महान
जे रहथि विविध विद्या निधान
भगवान राम तक विस्मित भए
रहलाह मौन लखि जनिक ज्ञान
नृप जनक सदेह विदेह विदित

जल जीवन मे सरसिज समान
जे गृही ह्वैत रहला विरक्त
गार्हस्थ्यक रचि नव मूल्य-मान
से सब सन्तान अहींक रहथि
अछि कालजयी बनि हुनक नाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

विद्या-वारिधि उदयन, मंडन
कविकोविद बालक शंकर सन
नृप शिव महेश हरसिंह देव
विद्यापति पिक कविता-कानन
निगमागम मे निष्णात बहुत
सन्तान भेल छथि गुण-ग्राम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

भारती सरस्वतिये सदेह
लाखिमा रानी,– कविताक स्नेह
जनिकर, बनि विद्यापतिक गान
आनन्दित राखथि, गेह गेह
दुहिता अहाँक छथि भेल बहुत
विद्या विशारदा, धर्मधाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

बनि पुनि राजर्षि महर्षि प्रसू
जग गृहदेवी बनि कए विलसू
तन सँ हम कतहु रही, मन मे
महिमा, ममतामयी,–अहीं बसू
मा मिथिले, बसल रहय दृगमे
छवि छटा अहँक ई अष्टयाम
अय जनम भूमि सय सय प्रणाम

मैथिली कविता, जुलाइ १९६९

४. बनता प्रह्लादक सन

हो विश्वास अचल अविचल, श्रद्धा गहींर सागरसन
तँ न रोकि पाओत लक्ष्यक दिशि बढ़ब विघ्न बाधा वन
असंभवो संभव भ' जाइछ कथा कहय प्रह्लादक
खाम्ह फाड़ि हरि नरहरि भ' की देने छलनि ने दर्शन ?
× × ×
जे श्रद्धा विश्वास विषयमे बनता प्रह्लादक सन
सफल स्वलक्ष्य-लाभ करबामे निश्चय से जन ।

मैथिली अकादमी पत्रिका,
दिसम्बर-जनवरी १९८०-८१

५. जीवन्तक परिचय थिक

नहि निर्विकार निशिसन होनी जे मूक मृतक सन सब देखय
होनीक कि हो अधलाह, कथुक कनिओ ओ नहि प्रतिकार करय
आजुक युगलै उपयुक्त न ओ, ओकरोलै जग उपयुक्त न ई
जग अजागलस्तन सन बूझत व्यर्थक अस्तित्व ओकर निश्चय
× × ×
रहि मौन मूर्त्तिवत् देखबटा, संवेदनशील न मन राखब
अधलाहक ने प्रतिकार करब ने नीकोकेँ साकार करब
अस्तित्वहीन अस्तित्व अपन अपनहि क' लेब, कहब एकरा
जीवन्तक परिचय थिक कि करब कर्तव्य, आँखि खोलने रहब

मैथिली अकादमी पत्रिका,
दिसम्बर-जनवरी १९८०-८१

६. नीरद !

नीरद निखिल लोक हितकारी
रवि रश्मिक शर डरसँ सूखल सरक होउ भयहारी
कयलक अवनीकेँ आकुल अति आतप अत्याचारी
अनुकम्पा अविलम्ब आब करु हे व्योम बिहारी
उचित न ऊपर उठि गेलापर सुधि निचलाक बिसारी
जकर अंग छी, सैह शोषणक अछि भऽ गेल शिकार
भेले जाइछ क्षीण क्षणे क्षण ताल, तलैया, धार
अपने सभक हिया फाटय, हे शीतल रस-संचारी
सरक सलिल निर्मूलो सूखिकेँ पंकिल भेले जाइछ
रुद्र रूप दिनकरक देखि दादुरो दवकले जाइछ
जीवन, जीवनप्रद अविलम्बे आब अवनिपर ढारी
नीरद निखिल लोकहितकारी

मिथिला मिहिर, १ जुलाइ १९७९

७. नीच नीरक रीति

नीच नीरक रीति
त्यागि उन्नत शिखर, जोड़य
रज पतितसँ प्रीति

अपन निर्मलता गमाबय
करय रजकेँ पाँक
स्पर्श होइते जकर लेथि
सिकोड़ि सभ मुँह,नाक

स्वयं नीरेकेँ करैछ
निकृष्ट नीरक नीति
नीतिये नहि, होइछ नीरक
निम्न गमनक वृत्ति

नीरसँ बढ़ियाँ बहुत
होइछ समीर स्वभाव
रजहुकेँ आकाश लगबय
जकर दिव्य प्रभाव

श्रेष्ठ नीरवसँ समीरक
रीति, नीति, सुप्रीति
नीच नीरक रीति

मिथिला मिहिर, २२ अप्रैल १९७९

८. लक्ष्य बनय ऊर्ध्व गमन

लक्ष्य बनय ऊर्ध्वगमन

सदाचरण शुद्ध सलिल
सँ स्वमनक प्रक्षालन

भीतर पैसऽ पड़ैछ
ऊपर बढ़बाक लेल
जड़िक धसब, छिपक बढ़ब
वृक्षक ई सीख देल
अन्तर्दिशि अधिक बढ़थु
पैघ बनक इच्छुक जन

अन्तर्मुख भेल करब
तँ न पाप-पाश पड़ब
निर्मल जीवनक शान्ति
सुधा अनायास पीअब
दिक्ष्य बनक लेल बनी
अन्तर्मुख आजीवन

लक्ष्य बनय ऊर्ध्वगमन

मिथिला मिहिर, २२ अप्रैल १९७९

९. मानव महिपर हो

मानव जीवन ऊर्जस्व बहुत
आश्चर्यजनक क्षमता संयुत
भगिरथ प्रयाससँ निर्धारित
पथसँ होबऽ पाबय नहि च्युत

ओहि ऊर्जाकेँ बिकसा पाबय
से क्षमता जन-जनमे जागय
सवितासन सब लोकक आत्मा
होइछ ऊर्जा आलोकालय

वैचारिक दुर्बलता तोयद
छापऽ पाबय नहि अन्तर्नभ
आत्मादित्यक आलोकेकेँ
ओ तोयद कयल करय निष्प्रभ

मंदे आचरणक किरण रहत
दुर्बलता तोयद जँ न हटत
अव्यर्थ मनोवल वायु बहओ
दुर्बलता तोयद तखन छँटत

कालक आँगनमे एतऽ ओतऽ
बरखाक बुन्द सन जतऽ ततऽ
खसि खसि ई जीवन नष्ट न हो
भेटत ई दुर्लभ रतन कतऽ !

क्षमता-विकास दिशि जँ मानव
रहि सजग करत श्रम सब संभव
अमरत्व लाभ लऽ अपना लै
वरदान देत जगकेँ नव नव

महिकेँ मानव कऽ देअय स्वर्ग
पर से न करय भऽ हस्तखड्ग
शस्त्रास्त्र अहिंसा, सत्य बनय
मानव, महिपर हो देव वर्ग

महि मंजुल कऽ मानव राखय
सुखं सामंजस्यक वायु बहय
'सर्वे भवन्तु सुखिनः'क वृत्ति
अवनीकेँ अमर लोक बनबय

मिथिला मिहिर, २७ मइ १९७९

१०. जनता-जनार्दन

कौआ कोइलीकेँ उल्लू
बनबैते आबि रहल अछि
अण्डा अप्पन कोइलीसँ
पोसबैते आबि रहल अछि
भारतीय जनतंत्रक जनता
कोइली अछि औखन घरि
कौए जकाँ राजनीतिक दल
कपटाचार-रमल अछि

जनता विहगवृन्द फँसबऽले
घूमि रहल बेहाल
आकर्षक वादा दाना
छिड़िआबय टालक टाल
चिड़ीमार सभ, सकल राज-
नीतिक दल सभ दिस पसरल
ताबड़तोड़ पसारि रहल अछि
भ्रामक भाषण-जाल

जनता अछि पर्याय जर्नादन
केर, कहल जाइछ ई
से मारीच हेम मृग रूपी
सँ धोखा खायत की ?
से सुयोग्य नहि, बेरि-बेरि जे
ठकल जाथि कपटीसँ
छूटि न पाबय कर विवेकसँ
विश्लेषणक कसौटी

वर मत माङि रहल अछि
सज्जन टा नहि, बहुतो दुर्जन
औढरदानी बनी न जनते !
बनिकऽ रही जनार्दन
वर न बनाबय, भस्मासुर,
वरदानहिकेँ दुखदायक
भस्मासुरक उदय दुख देलक,
ओ पाबय नहि जीवन

मिथिला मिहिर, ७ अक्टूबर १९७९

११. हे विद्यापति !

क्षुधाक्षीण वृन्दक विलखब दिसि देखू हे विद्यापति !
शोभय नहि स्वर्गक निवास रहि उदासीन स्वजनक प्रति
आउ अन्नपूर्णा लऽ जल्दी, मेटू स्वजनक दुर्गति
श्रेष्ठ लोक आबथि अहाँक सन, ई अछि आवश्यक अति

ई ! की पौष्टिक आहारक रट ? पेट न जतऽ भरैछ
ताकय ताड़ी तुरुक ततऽ मांड़ी न जतऽ भेटैछ
दूधक नदी जतऽ बहैत छल, छल घी जाइत जारल
ततऽ आइ ई हाल भेल जे भूखेँ लोक मरैछ

प्रकृति प्रदत्त प्रभूत सम्पदासँ ई देश भरल अछि
उर्वर थल जलयुक्त, लोक नहि कम, खेतियो सरल अछि
दीन देश अछि तदपि अर्थ संकटमे जन जीवन अछि
जन जीवन मृतवत् लगैछ, मानू ओ नदी मरल अछि

स्वयं स्वर्ग-सुख भोगी, स्वजनक दुख दुर्गति न दुराबी
ई न पैघ लोकक लक्षण थिक, वृत्ति न ई अपनाबी
देखी दारुण दुर्गति देशक, दया करी, झट आबी
हे विद्यापति ! मिथिलेमे आबी, कवि जगक कहाबी

शृंगारक रस सरस पदक रचनाक समय नहि बाँचल
शीतसमर, शोणित समरानलसँ ई जग अछि आँचल
विश्व शांति रस सरस सौम्य रचनासँ सबहि जुड़ावी
भेटय मानवताक सितासँ उर जन-जनक मिठासल

टिकि न सकय निशि देश दुर्दशा, से रचना-रवि चमकय
भरि भूमण्डल ज्योति पसारय पद्य अहाँक प्रभामय
नव जीवनसँ परिप्लावित कऽ देअय पद्य पयोद
रचनासँ श्रीमय स्वदेश हो, सुख समृद्धि-छवि छहरय

छिड़य विश्व-रण रक्त-मुक्त–आदर्श रहैक अहाँक
शरसमूह सद्भावक छोड़ी, तानि धनुष कविताक
बहय बिहारि भ्रातृभावक भूभरि भऽ जाइ प्रभावित
परिवर्त्तनक पद्यसँ हो प्रोत्साहित मन जनताक

महामहिम ! मिथिलेमे लऽ अवतार करी ई काज
जे मिथिला हो विश्वशान्ति संस्थापकमे सिरताज
गुरु गौरव 'मैथिली' प्राप्त कयने छथि अहिँक प्रतापे
सम्मानित सर्वत्र बना दी पुनि मैथिलक समाज

मिथिला मिहिर, २८ अक्टूबर १९७९

१२. वसन्त

भऽ रहल वसन्तक शुभागमन
ई देखि व्यस्त छथि बहुत पवन
भऽ रहल आगमन ऋतुराजक
ई बात पवनलै बड़ लाजक
जे प्रकृति पुरी नहि रहय साफ,
ओ योग्य कहाओत नहि काजक
राजाक नजरिमे खसि न पड़थि
एहि चिन्तासँ छनि चंचल मन
गरदा, धूरा नहि रहय ततहु
ऋतुराजक नजरि न पड़य जतहु
पवनक प्रयास जे खढ़ोपात
आगमनक समय न रहय कतहु
ऋतुराज न कहुँ नाराज होथि
पछवा बाढ़नि तेँ चल अनुखन
राजा नहि जाथि कतहु खाली
जा, राखथि पैघत्वक लाली
अनुकूल अवसरक दान देथि
मन राखि कि पदक प्रतिष्ठा ली
पाबथि जनिका जतबा क्षमता,
कृपणक नहि हो राजाक भ्रमण
ऋतुराज पहुँचिकेँ प्रकृतिक पुर
नवजीवन वितरित करथि प्रचुर
पाबथि याचक गण गाछ गुणी
कोपर कंचन आँजुर आँजुर
स्वागतक साज सामान भरल
आकर्षक अछि अवनिक आङन

भू भूषित भेलि पहिरि अम्बर
सुमनावलीक सुरभित सुन्दर
स्वागत रत छथि सोत्साह साजि

थारी खेतक हरियर हरियर
पिक पहुँचल छथि करबाक लेल
ऋतुराज प्रशस्तिक कल गायन
आगमन वसन्तक सन्तक सन
भेटऽ लागय सुमनक दर्शन
वातावरणे बनि जाइ भव्य
वायुए बहय जनु मोद मगन
उत्साह उमंगक उत्स जकाँ
बनि बिलसय प्रकृतिपुरक जीवन

ऋतुराजक अछि महिमा महती
स्वयमे सबमे जागै मस्ती
सुषमा सर-सरसिज सन सुन्दर
लागऽ लागय प्रकृतिक बस्ती
सब काह-कूहकैँ मेटा करथि
ऋतुराजक स्वागत प्रमुदित मन
ऋतु तऽ अनेक, ऋतुराज भेल
केवल वसन्त, जँ जगक लेल
ओ कयल करय श्री, सुखक सृष्टि
आमोद प्रमोदक रेल-पेल
अछि स्वागत, शीघ्रे आबि जाइ
ऋतुराज वसन्त ! सन्त राजन् !
भऽ रहल वसन्तक शुभागमन
ई देखि व्यस्त छथि बहुत पवन

मिथिला मिहिर, २४ फरवरी १९८०

१३. ओ छथि

समाजक शांति समृद्धि लेल जे दऽ न सकथि सहयोग अपन
बूझथु स्वयंमे कि समाज शालिले' ओ छथि नीरस शरदक घन ।
अर्थक अम्बर छापने रहथु, पसरऽ न देथु आनक आभा
तऽ दोष ककर हुनकर जँ मान करय नहि शालि समाजक मन ।

जे जीवन मान प्रधान न से जीवन जोगबी, की काज तकर ?
जीवन तऽ चाही जकरासँ भऽ सकय समाजक छवि सुन्दर ।
जग-जीव असंख्य, असंख्यक एक बनब संख्या, की तुक रखैछ
उडु गणमे गनबक की महत्व ? बनि रही समाज-नभक दिनकर ।

जेहि जलनिधिमे सीपक न कमी, सीपे बढ़ब प्रयोजन की ?
रत्नाकर कहबहुले' ओकरा, ओहिमे स्वातीक सलिल भरि दी ।
आजुक जे अपन समाज-सिन्धु, से सीप सभक सदन बनल
स्वाती घन जनगण बनथु, सिंधुसँ भेटय महामनुज मोती ।

मोती गुणज्ञ जे प्रज्ञ, स्वयं जुटता समाज-सागरक निकट
मुखरित राखत प्रज्ञक जुटान पुनि अपन समाजक सागरतट ।
मोती-मालाक प्रभा पुंजक भू भरि बखान होवऽ लागत
सहजे सहि लेत समाज अपन आजुक संक्रमण समय-संकट ।

मिथिला मिहिर, १९ अप्रैल १९८१

१४. अंशुक अपन समाज

नूरे सन भऽ गेल रेशमी रहितहु अपन समाज
अपन कहबमे एखन सुसंस्कृत जनकेँ लागय लाज
सुरुचि सुसंस्कृतकेँ करैछ अति आकर्षित निर्मलते
रुचिर रुचिक निर्वाह न होइछ जतऽ गंदगिक राज

अंशुक जखन मचोड़ल मोड़ल मैल कुचैल रहैछ
मूल्यवान रहितहुँ न रुचिर रुचि मुदित मने पहिरैछ
अंशुक अपन समाज-कुरुचिक रजसँ नूर बनल अछि
सुविवेकी जनगणकेँ छूबऽ जोगो ई न लगैछ

अंशुक होइछ मूल्यवान बड़, विमल बनल रहि जाइ
सब मिलि करी प्रयास एकरे, श्रमसँ केओ न डेराइ
मैल मेटाबऽमे पटु जे, झट आबथु आगू आइ
अंशुक अमल समाज बनाबथु, आवश्यक अछि आइ

छोड़ि समाज पड़ायव, संभव सेहो भऽ न सकैछ
लोक खराव समाज रहओ जे, सभकेँ रहऽ पड़ैछ
तेँ पकड़ी न पलायन-पथ, संघर्षहुसँ न पड़ाइ
संघर्ष सलिले समाज रेशमीकेँ विमल करैछ

मिथिला मिहिर; ३१ मइ १९८१

१५. विमल व्याल ई

कयल यतन जे विभव व्याल ई
दैन्य दादुरेटापर जीबय
प्राणवायु मानवता जन-जीवन–
रूपी देहक पर पीवय
भव भ' सकव न जँ, त' ई
मनियार साप सम्पति सम्हरत नहि
ई अर्थक अहि अनिलाशन रहि
गुण गणेश-वाहन बनय भय

विभव व्याल विलसय वनि भूषण
से क' सकत तपस्वी जीवन
होयव भूति विभूति रँगल रहि
सुमनस सुखद, समर्थ शिवक सन
सम्पति सापक संग्रह-रुचि त'
अछि अनिवार्यो बनव गारुड़ी
रहितहुँ त' संहार शक्ति, संहार न
क' पाओत विषधर धन

विषधर धनसँ होइछ हानिए
ई नहि उचित विचार
स्वर्ग नरक रचबाक शक्ति
राखैछ धनक व्यवहार
विभव-विमुख नहि बनी
भव-सागर-सेतु सकत भ'
विभवक वलसँ बनि सकैछ
सुखमय सुन्दर संसार

मधुकर सन सम्पति संग्रह हो
भूति-भोगमे भवसन हो मन
सम्पति त' मनियार साप
होइतहुँ, विलसत बनिकेँ भव-भूषण
विभव विभूषण बनओ, बनबमे
विभवी, हो अनिवार्य वृत्ति ई
साप न पवनाशने होअय, ओ
करय पातकी भेको-भक्षण

१६. चारित्रिक दुर्बलता तमकेँ

व्रत लेल धराधर धरा धरक
व्रतसँ अद्यावधि त' न हटल
आतप, अन्हड़, ओला आदिक
आघात असह्य असंख्य सहल
व्रत-पालनमे संघर्ष, घोर
संकटक सामना कर' पड़य
श्रम-स्वेद बहल शैलक, प्रमाण
मानू तकरे थिक निर्झर जल

व्रत वह्नि बनैछ व्रतीक लेल
चमकाबय चामीकर चरित्र
लेकिन व्रत ली त' ली सद्व्रत
ओ जीवनकेँ बनबय पवित्र
ओहि जीवन-वनमे नहानहा
मन अति अशान्त तक होअय शान्त
चारित्रिक दुर्बलता सभकेँ
भेटय पवित्र जीवनक मित्र

मैथिली अकादमी, पत्रिका अप्रैल-मइ १९८१

१७. मानव मात्र लेअय व्रत

भ' सकैछ सब राम कृष्ण नहि महावीर वा बुद्ध
पर न असम्भव अछि राखब आचार-विचार विशुद्ध

शान्त संयमित चित्त रहय, आ होबय आत्मनिरीक्षण
भव-बाधा त' आत्मोन्नति-पथ क' न सकत अवरुद्ध ।

भौतिक भोगक भूरि-भूरि सामग्रिक अति आकर्षण
लोहाकेँ चुम्बक जहिना, तहिना खीचय लोकक मन
संयम, चिन्तन, आत्म-निरीक्षण भ' सकैछ अवरोध,
आकर्षणसँ बचक लेल एहि तीनुक परम प्रयोजन ।

बनत त्रिवेणी संयम, चिन्तन, आत्मनिरीक्षणसँ जे
पतन रूप पापक प्रनाशनक शक्ति सलिल राखत से
जे समाज बनि रहत त्रिवेणी क्षेत्र, रहत सम्पन्न
सुमन शस्यसँ सजले राखत स्वयं अभाव-अभावे ।

आदि मूल मानवक एक, पीढ़ीक टा अन्तर भेल
दुख एकरे–एहि अन्तरसँ बन्धुत्व बिसरि ओ गेल
हिंसक पशुक प्रवृत्ति रक्तपायी, अपनओलक मानव
मानव बनल वनागि बाँसवन, वंश बाँसवन लेल ।

कोन सुरक्षित जगह ? जहाँ जा रहओ लोक कुल त्यागि
भोग-लालसा लपट लपटि सर्वत्र लगओलक आगि
मत्स्य-न्यायमे रमल महाबल सब छथि भूखल बाघ
जल, थल, नभ, नहि कतहु निरापद, बसओ जत' जन भागि ।

छीना झपटी होड़, काल्पनिक शंका सभसँ घेरल
महाशक्ति सभ, यतनो क' बहरायबमे छथि असफल
संसारक संहार-शक्ति-संग्रह-रत छथि सभ शक्ति
अर्थामृतसँ ध्वंसक विष सर्वत्र जा रहल कीनल ।

मानव मात्रक दृष्टिकोण आमूल न यावत बदलत
तावत तक ई मनुकुल अपनो रक्षा लै नहि सम्हरत
मानव मात्रक दृष्टिकोण बदलय मानव जीवन प्रति
शान्त सुखी संसार बनाबक मानव मात्र लेअय व्रत ।

मानव मात्रक मंगलकेँ क' लक्ष्य चलथि सभ लोक
छनि संसार बनाबक हुनका सुरक, न असुरक ओक
शीशा आत्म-निरीक्षण, संयम, शान्तिक अछि अनिवार्य
जे उद्देश्यक दीप न मिझबय, स्वार्थ समीरक झोंक ।

मैथिली अकादमी पत्रिका, फरवरी-मार्च १९८२

१८. पन्द्रह अगस्त

पन्द्रह अगस्त !
देखू, देखू, भारत समस्त
कतबा अछि स्वागत लेल व्यस्त
पन्द्रह अगस्त !
वार्षिक पाहुन ! प्रति वर्ष आउ,
एहिना आमोद प्रमोद लाउ,
आगमन अहाँक अनन्त बनय
भारतकेँ भव-भूषण बनाउ
सुख, शान्ति, समृद्धि सनेस दिअ,
भारत भूखल अछि अस्तव्यस्त
पन्द्रह अगस्त !

शोषण, संघर्षण, रणक लेल
रचिरहल समा,—आजुक झमेल,
किछु महाशक्ति संसारे पर,
हाबी छथि, शनिक कुदृष्टि भेल
बनबू मृत्युञ्जय भारतकेँ
आश्वस्त होअए संसार त्रस्त
पन्द्रह अगस्त !

सामाजिक सामंजस्य लाउ
सुरुचिक समीर सब दिशि बहाउ
भारत बनबओ जल्दी जगकेँ
प्रातृत्व-भरल-से कऽ देखाउ

विलसय वसुधा बनि देवलोक
भऽ संहारक शस्त्रास्त्र–न्यस्त
पन्द्रह अगस्त !

अन्तर्राष्ट्रीय कुचक्र एखन
घहरय बनि बनि विध्वंसक घन
आन्तरिक अशान्ति बिहाड़ि बनल
उड़बी कुचक्र घन तृण तूर सन
स्वातंत्र्य सूर्य चमकऽ अवाध
छथि भेल कुचक्री केतु-ग्रस्त
पन्द्रह अगस्त !

मिथिला मिहिर, १४ अगस्त १९८३

१९. चलओ

अर्थक अमरलती तरु जन-जीवन पर जाइछ पसरल
मानवता रूपी मंजुलता तरुक जा रहलह ह हरल
विवुध वाटिका भारतीय-संस्कृति भऽ रहल उदास
अछि भरने जा रहल बाटिका काँट दुराचारक दल

ओढ़ने अमरलती अम्बर हेमाम लगओ बड़ सुन्दर
अमरलती तरुकेँ दुर्बल कऽ दैछ भीतरे भीतर
बढ़य विभव तऽ विबुध-बेलि बनि विटपवृन्द विलसाबय
लोक जीवनक उपवनकेँ ओ बनबय मंजु मनोहर

बनल अमरलत्ती अछि अपना लोकक अर्थोपार्जन
लतरि लतरि छवि क्षीण कऽ रहल अछि जन जीवन उपवन
जनिक प्रतापेँ विवुध बेलि बनिजाइ अमरलत्ती ई
जन जीवन चाहैछ,–चलओ हुनके अनुशासन शासन

मिथिला आलोक, फरवरी-मार्च १९८२

२०. मानव मानव रहओ

सम्प्रदायवादक ई वारि बढ़य नहि
विध्वंसक बाढ़िक स्वरूप पकड़य नहि

होइछ भूरि भयंकर बाढ़िक लीला
शालि शान्ति सामूहिक सब जाइछ दहि

क्षुद्र स्वार्थ-संकीर्ण भेल मानव-मन
सम्प्रदायवादक अपनाबय जीवन
बिजलीटा बरिसय जे, ओ थिक से घन
ओकरहिसँ उजड़य सुख-सुमनक उपवन

रक्तपात सँ विमुख रहओ मानवता
रक्त पातकेँ रोकय मंजु मनुजता
रक्त बहाबय सम्प्रदायवादक रुचि
बढ़ओ लोकमे ई रुचि मेटक क्षमता

लोक लोक थिक; हिंसक पशु न बनओ ओ
मन सँ मानवता केँ देअए न ओ धो
हिंसक बनबय सम्प्रदायवादक मद
मानव-मानव रहओ, न मद-वश पशु हो

मिथिला आलोक १९८२

२१. पावस ! हे रस राज !

पावस ! हे रस राज !
आगमनक अवसर विलोकि जुटि गेल अहाँक समाज
उज्जर-उज्जर बगुला सब जुटि गेल जलाशय कात
चाखै लै कूदति फानति सफरी केँ लगबय घात
बेङ बेङची बहरा फुदकय, करय टर्रटा हल्ला
अपन-अपन धुनमे डूबल क्यो सुनय न ककरो बात
देखि व्यस्तता बूझि पड़य, –सम्हरय नहि अपनो काज

व्यालवृन्द बीहड़िसँ बहरा बनल बहुत उतपाती
चोरानुक्की खेल करऽ लागल ओ प्राण विघाती
पिक पपीहरा रहि-रहि रव कय तोड़थि निशि नीरवता
डेरबथि चमकि-चमकि चपला, घन घहरि-घहरि उकपाती
अभ्यासक अनुसार अपन सब साजथि स्वागत साज

सूखलसन सब तृण लतादि से उठल लहलहा पात
लता-बल्लरी अवलि ललकिकेँ लपटल गाछक गात
आलिंगनक अतुल सुख नहिं रहि पाबय भितरे-भीतर
स्वेद बिन्दु झलकय जल अँटकल पानि पड़क पश्चात्
बरखासँ भऽ रहल मुदित मन कृषकक बे-अन्दाज

कृपण बनल बारिक निधि वारिद रखने छथि पर्याप्त
पावस प्रबल बनल बलपूर्वक कऽली जलनिधि प्राप्त
हे रस राज ! बरसाकेँ कऽ दी राजोचित रसदान
हो अहाँक रसदानक यश संसार सगरमे व्याप्त
प्यासल पृथिविक, अन्नहीन जनगनक बचाली लाज
पावस ! हे रस राज !

मिथिला आलोक, जुलाइ-अगस्त १९८१

२२. उत्सुक सब स्वागत लै

पागल जकाँ करय पछबा दिशि दिशि उड़बय रज रंग
बढ़ि-बढ़ि बनि ऊधमी करय बड़ प्रकृति परी केँ संग
प्रथा पुरान पत्र पट फेकय बेरि-बेरि झकझोरि
उच्छृंखलता पवन पश्चिमिक देखि परी अछि दंग

बड़ पीपर सन झमटगरो सब केँ कयलक श्रीहीन
लुटा गेल सम्पत्ति सेठ सन देखि पड़थि ओ दीन
भऽ विहीन सब धन दल बल सँ तकइत छथि आकाश
ताकथि तनिकाँ, आनि दैनि जे झट हरियरी नवीन

उत्सुक सब स्वागत लै छथि हे ऋतुपति नृपति वसन्त
उद्धत एहि पछबाक पगलपन केरि करू झट अन्त
जन जन लता विटपवन उपवन मे हरियरी विराजय
दिग दिगन्त तक बूझि पड़य व्यापित अछि शासन सन्त

जन जीवन उपवन मे छवि वासन्ती छहरऽ लागय
दिग दिगन्त हो सज्जन सुमनक सदाचारण सौरभमय
वातावरण बनय संसारक शान्ति स्नेह सहयोगक
स्वप्न बनय बसुधा पर शोषण, संघर्षण-समरक भय

मिथिला आलोक, जनवरी-फरवरी १९८०

२३. हे सरस श्याम घन

द्रबू, द्रबू, हे सरस श्याम घन ।
रसे रसे रस वरसाउ ततेक कि
प्रमुदित होअए ताप नापित मन
द्रबू, द्रबू, हे सरस श्याम घन ।

अंकुर रोमावलि सँ पुलकित
गात धरा देखबामे आवय
हरियरीक छवि छटा मनोहर
दिन-दिन अधिकाधिक क्षिति पाबय
शनैः शनैः रिमझिम रस-दानक
सुख सबकेँ होइछ मनभावन
द्रबू, द्रबू, हे सरस श्याम घन ।

मिथिला आलोक, नवम्बर-दिसम्बर १९७९

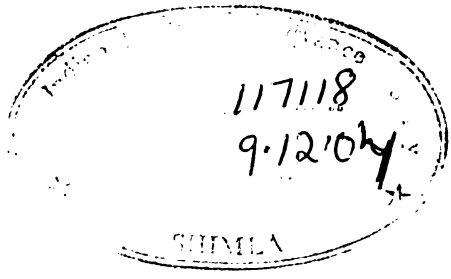

महात्मा गांधीक सिद्धान्तक अनुगामी, स्वतंत्रता संग्रामक अथक योद्धा, राष्ट्रभारतीक प्रति अपार श्रद्धाशील, मातृभाषा मैथिली आ राष्ट्रभाषा हिन्दीक अनन्य उपासक, प्रारंभमे चौदह वर्ष धरि बिहार विधानसभामे मिथिलांचलक जनप्रतिनिधि रूपमे निर्वाचित पूर्व विधायक **पं. जयनारायण झा 'विनीत'**क मैथिली आ हिन्दीमे असंख्य कविता एवं निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित छनि । हुनक मैथिलीमे दू गोट आ हिन्दीमे तीन गोट प्रकाशित काव्यसंग्रहक अतिरिक्त मैथिलीमे कतोक कविता-संग्रह एवं खण्ड-काव्यक पाण्डुलिपि प्रकाशनक लेल सुरक्षित राखल छनि । 'विनीत' जीक जन्म एहि शताब्दीक प्रारंभिक वर्ष १९०२ ई. मे भेलनि आ निधन १९९१ ई. क १४ फरवरीकेँ । एहि तरहेँ अपन दीर्घ जीवनमे हुनका राजनीति एवं समाज-सेवाक संग-संग साहित्य-साधना तथा अर्चनाक पर्याप्त अवसर भेटलनि ।

कवि 'विनीत'क काव्यमे प्रकृति-सौंदर्यक प्रति प्रेम, 'देशक स्वर्णिम अतीतक प्रति आत्मगौरव, दुर्व्यस्थाजन्य विकृत होइत वर्त्तमानक प्रति संताप आ आक्रोश तथा आशामय भविष्यक प्रति विश्वासक दर्शन' पाठककेँ होइत छैक । 'विनीत'क कविताक मुख्य स्वर अछि—उपदेश, उद्‌बोधन, चेतौनी आ दर्शनिकता ।

एहि विनिबन्धक लेखक डॉ. सुरेश्वर झा राजनीतिशास्त्र विषयक विद्वान् तथा मैथिलीक कथाकार एवं निबन्ध हिन्दी ओ अंगरेजी तीनू भाषामे समान अधिक मैथिलीमे कतिपय पुस्तक प्रकाशित छनि तथा विचार-प्रधान निबन्ध एवं कथा प्रकाशित होइत प्राचीन ओ मध्यकालीन इतिहास, राजनीति, संस्कृति एवं अन्य विषयपर शोधपूर्ण निबंध लिखबामे हिनका विशेष रुचि रहलनि अछि । एहि सभ विषयपर अंगरेजी, हिन्दी ओ मैथिलीमे कतोक पोथीक पाण्डुलिपि तैयार राखल छनि । सम्प्रति ई साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रतिनिधित्व करैत छथि तथा मैथिली परामर्श समितिक संयोजक छथि ।

Library IIAS, Shimla
MT 817.230 92 J 559 V
00117118

ISBN 81-260-0236-0

पच्चीस टाका